सर फ़ीरोज़शाह मेहता



हिन्दी प्रेस, प्रयाग

सर फ़ीरोज़शाह मेहता

लेखक
श्री० अवध उपाध्याय

सम्पादक
रामजीलाल शर्म्मा

प्रकाशक
हिन्दी प्रेस, प्रयाग

प्रथम बार] [मूल्य ।)

मुद्रक और प्रकाशक
रघुनन्दन शर्म्मा, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

विषय-सूची

सर फ़ीरोज़शाह मेहता

जन्म और वंश-परिचय



र फ़ीरोज़शाह का जन्म ४ अगस्त सन् १८४५ ई० को पारसी-घराने में हुआ था। पारसियों में इनका घराना बहुत प्रतिष्ठित है। प्रायः यह देखा गया है कि लक्ष्मी और सरस्वती में विरोध पाया जाता है। जहाँ लक्ष्मी रहती है, वहाँ सरस्वतो नहीं रहती और सरस्वती के पास लक्ष्मी फटकने भी नहीं पाती। परन्तु सर फ़ीरोज़शाह मेहता के विषय में यह बात नहीं कही जा सकती। इनका जन्म एक अच्छे सम्पन्न घराने में हुआ था और इन्होंने विद्याध्ययन भो ख़ूब किया था। इस कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि इनके पिता बहुत ही अधिक धनवान् थे, किन्तु केवल यह कि

वे एक मध्यम श्रेणी के मनुष्य थे। जिस समय सर फ़ीरोज़शाह मेहता का जन्म हुआ, उसके पहले ही मिस्टर दीनशा इदुलजी वाचा का जन्म होगया था। वास्तव में मिस्टर दीनशा इदुलजी वाचा इनसे एक वर्ष जेठे थे। दीनशा वाचा भी पारसी थे। वे भी प्रसिद्ध देशभक्त थे। इन दोनों पारसी सज्जनों में बड़ी घनिष्ट मित्रता थी। इन दोनों महापुरुषों ने अपने प्रयत्नों से भारत का बड़ा उपकार किया। इसमें सन्देह नहीं कि इस समय देश के काम में बहुत लोग लगे हुए हैं। परन्तु उक्त पारसी सज्जनों ने उस समय देश के काम में अपना जीवन बिताया, जबकि और लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित भी नहीं हुआ था।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता का नाम भी उन्हीं मनुष्यों में लिया जा सकता है, जिन्होंने देश के हित के लिए अपना जीवन बिता दिया।

पारसी लोग प्रायः व्यापारी हुआ करते हैं। सर फ़ीरोज़शाह मेहता के पिता भी व्यापारी थे। वे केवल भारत में ही व्यापार नहीं करते थे, किन्तु विदेश में भी। पहले तो वे चीन में ही अधिक व्यापार करते थे, परन्तु धीरे धीरे वे लन्दन में भी व्यापार करने लगे और इसमें अच्छी उन्नति की। उन्होंने अँगरेज़ी का अच्छा अध्ययन किया था और व्यापारियों में वे अपनी विद्या-कुशलता के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। व्यापारी लोग

उन्हें साहित्यिक व्यापारी कहा करते थे। जिस दिन सर फ़ीरोज़शाह मेहता का जन्म हुआ, उसी दिन पिता ने उन्हें अच्छी तरह से पढ़ाने का दृढ़ संकल्प किया था और उनकी प्रशंसा में यह बात कही जा सकती है कि उन्होंने अपने इस संकल्प को कार्य रूप में परिणत करके ही छोड़ा। उनके पिता व्यापारी थे, परन्तु वे शिक्षा के लाभों से भली भाँति परिचित थे। इसीलिए उन्होंने अपने पुत्र सर फ़ीरोज़शाह मेहता के पढ़ाने में ख़ूब धन ख़र्च किया।

अध्ययन

जब सर फ़ीरोज़शाह मेहता लगभग पाँच वर्ष के हुए तभी उनके पिता ने उन्हें पढ़ाना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने उस छोटी अवस्था में ही अपनी अलौकिक प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया। वे सदा अपने दर्जे में अव्वल ही रहते थे। कहा जाता है कि उन्होंने अल्पकाल ही में अँगरेज़ी वर्णमाला तथा अँगरेज़ी अंकों का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

अब तो अँगरेज़ी पढ़नेवालों की संख्या भारतवर्ष में बहुत बढ़ गई है। परन्तु जिस समय सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने अँगरेज़ी पढ़ना प्रारंभ किया था उस समय ऐसी दशा न थी। जो लोग अँगरेज़ी के एकसौ शब्दों को रट मारते थे, वे भी अपने को अँगरेज़ी-दाँ समझते थे। जो पाँच शब्द अँगरेज़ी

और दस शब्द अपनी भाषा के संयोग से एक टूटा-फूटा वाक्य बना लेता था, वह अपने को अँगरेज़ी जाननेवाला समझता था। उन दिनों हिन्दुस्तानी लोग अँगरेज़ों से प्रायः संकेतों के द्वारा बातचीत किया करते थे। बहुत लोग ऐसे भी थे जो दो शब्द तो अँगरेज़ी के बोलते थे और वाक्य के शेष शब्दों के लिए हाथ तथा मुँह से संकेतमात्र कर देते थे। उसी समय सर-फ़ीरोज़शाह मेहता ने अँगरेज़ी का अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया। इसलिए सर फ़ीरोज़शाह मेहता अँगरेज़ी पढ़नेवालों में प्रारंभिक अँगरेज़ी छात्र कहे जा सकते हैं।

इंट्रेंस पास करने के बाद इन्होंने कालेज में पढ़ना प्रारंभ कर दिया। कालेज में भी इन्होंने अच्छा नाम प्राप्त कर लिया। सर एलेक्ज़ेंडर ग्रांट इनसे बहुत प्रसन्न होगये। इनकी प्रतिभा से तो सब लोग प्रसन्न रहा ही करते थे। इनकी योग्यता और इनके विद्या-प्रेम ने ही ग्रांट साहब के ध्यान को आकर्षित किया था। इन्होंने १९ वर्ष की अवस्था में बी० ए० पास कर लिया। बी० ए० पास होने के छः महीने बाद उन्होंने एम्० ए० की परीक्षा दी। उसमें भी इन्हें सफलता मिली। इसके पहले पारसियों में किसी ने एम्० ए० पास नहीं किया था। उन दिनों एम्० ए० पास करने से भी बड़ा नाम होता था और सर फ़ीरोज़शाह मेहता के संबंध में ऐसा ही हुआ।

विदेश-गमन

जब सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने एम्० ए० की परीक्षा पास करली तब उनके मित्रों ने उन्हें इँग्लैंड जाने की सलाह दी, और उनके पिता ने भी उन्हें इंगलैंड जाने की सम्मति दे दी। जब कोई जाति दूसरी जाति से पराजित होती है तब वह अपने में सब दोष-ही-दोष पाती है और जीतनेवाली जाति को सर्व-गुणसम्पन्न ही समझने लग जाती है। इसमें संदेह नहीं कि पराजित जाति के अधिक लोग भेड़ की तरह एक ही ओर चलने लगते हैं। परन्तु कुछ विचारशील लोग इन गुण-अवगुणों का विश्लेषण भी करते हैं। जो जाति अपने को ग़ुलाम समझने लगती है उसमें इन सब बातों के विचार करने की शक्ति भी जाती रहती है। यही हवा आज भारतवर्ष में बह रही है। जो लोग इँगलैंड की भूमि का दर्शन करके भारत में आते हैं, उनकी बड़ी गहरी पूजा होती है और जो लोग उस भूमि का दर्शन नहीं कर सकते उनकी योग्यता चाहे जो हो, वे मूर्ख ही समझे जाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि विदेश जाने से कुछ लाभ ही नहीं है। परन्तु केवल विदेश जाने से ही कोई बड़ा भारी विद्वान नहीं हो सकता।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के एक मित्र ने उन से कहा—"बुद्धि को परिमार्जित तथा स्वतंत्र करने के लिए इँगलैंड जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसमें संदेह नहीं कि आपके विचार पहले

ही से स्वतंत्र हैं, परन्तु उनके विकास और उच्च विषयों की शिक्षा के लिए इँगलैंड आदि देशों में जाना आवश्यक है। पूर्व के निवासियों को तो एक बार वहाँ जाना ही चाहिए छोटी अवस्था में जाने से अधिक लाभ होने की संभावना है, क्योंकि इँगलैंड के विश्वविद्यालयों में कुछ दिन रह कर अध्ययन करने से कई लाभ हो सकते हैं।"

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के दूसरे मित्र ने कहा—"इँगलैंड का पबलिक-जीवन बहुत ही पवित्र, बहुत ही सुन्दर और उन्नति के सोपान पर चढ़ानेवाला है। वहाँ जाने से हम लोग अपने संकुचित विचारों को अवश्य ही भूल जा सकते हैं और इनका भूलना हम लोगों के सामाजिक जीवन के लिए बहुत आवश्यक है।"

एक तीसरे मित्र ने कहा—"क्या तुम नहीं जानते कि इँगलैंड में यहाँ से कम प्रतिभाशाली पुरुष भी गये हैं और वे वहाँ से बहुत-कुछ सीख कर आये हैं ?"

इन सब मित्रों के अतिरिक्त सर एलेक्ज़ेंडर ग्रांट भी सर फ़ीरोज़शाह मेहता को बहुत चाहने लगे। वे भी यही चाहते थे कि वे इँगलैंड कुछ दिनों के लिए अवश्य जायँ। उन्होंने भी इन्हें ख़ूब उत्साहित किया।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता को रुस्तमजी जमशेदजी जीजीभाई की ओर से इँगलैंड जाने के लिए छात्रवृत्ति मिल गई और वे इँगलैंड चले गये।

इँगलैंड में

रुस्तमजी जमशेदजी जीजीभाई बड़े परोपकारी तथा देशभक्त थे। उन्होंने सर फ़ीरोज़शाह मेहता को छात्रवृत्ति तो देदी, परन्तु उनकी दशा बहुत बिगड़ गई जिससे उन्हें पूरी छात्रवृत्ति नहीं मिली।

इँगलैंड में सर फ़ीरोज़शाह मेहता तीन वर्ष तक लिनकन की की सराय में रहे। इन तीन ही वर्षों में उन्होंने अच्छी उन्नति कर ली थी। उस समय दादाभाई नौरोज़ी भी इँगलैंड ही में थे। वे पारसी थे तथा भारतवर्ष की उन्नति के लिए वहाँ प्रयत्न कर रहे थे। उस समय दादाभाई नौरोज़ी का सर फ़ीरोज़शाह मेहता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसमें तो लेशमात्र भी संदेह नहीं कि जिन लोगों का दादाभाई नौरोज़ी से संपर्क होता था, वे उन पर मुग्ध हो जाया करते थे। अपने प्रशंसनीय गुणों तथा देशभक्ति के कारण ही भारत ने उन्हें तीन बार कांग्रेस का सभापति चुना था। फिर इस देशभक्त तथा आदर्श पुरुष का सर फ़ीरोज़शाह मेहता पर कैसे प्रभाव न पड़ता?

इस समय दादाभाई नौरोज़ी भारत के लिए इँगलैंड में आन्दोलन कर रहे थे। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने इँगलैंड में अच्छा नाम कमाया। उन्होंने वहाँ पर कई मौलिक लेख भी लिखे थे जिससे उनकी विद्वत्ता का अच्छा परिचय मिलता है।

शिक्षा-प्रेम

जब सर फ़ीरोज़शाह मेहता इँगलैंड में थे तब उन्होंने ईस्ट-इण्डियन एसोसिएशन में एक पत्र पढ़ा था। उस पत्र का संबंध बम्बई की पाठन-प्रणाली से था। इस पत्र में उन्होंने शिक्षा पर बहुत ज़ोर दिया था। सर फ़ीरोज़शाह मेहता शिक्षा के संबंध में नई रोशनी के मनुष्य कहे जा सकते हैं। इस पत्र के एक अंश का उद्धृत करना बहुत आवश्यक जान पड़ता है। वह यों है:—

"भारतवर्ष के निवासियों की शिक्षा का क्या उद्देश्य है और उससे अन्तिम लाभ क्या है? भारतवर्ष के निवासियों की शिक्षा का आदर्श क्या है? यदि यही प्रश्न इँगलैंड, फ्रांस अथवा जर्मनी के बारे में पूछा जाय तो उसका उत्तर निश्चय पूर्वक दिया जा सकता है। जीवन की भिन्न भिन्न दशाओं के अनुकूल ही शिक्षा का ध्येय नियत करना चाहिए। परन्तु क्या यही बात भारतवर्ष के बारे में भी कही जा सकती है?

इस समय दो भिन्न भिन्न सभ्यताओं में घोर युद्ध छिड़ा हुआ है। एक सभ्यता तो बहुत ऊँची है और दूसरी बहुत नीची है। एक सभ्यता श्रेष्ठ है और दूसरी उससे कम है, एक सभ्यता युवावस्था में है और दूसरी अभी बच्चा है। इन दोनों सभ्यताओं में बिलकुल समानता नहीं है। एक में तो युवावस्था का घमंड और बल है, दूसरी में लड़कपन की अबोध दशा है।"

इसके बाद सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने शिक्षा के पक्ष में बहुत कुछ लिखा है। उन्होंने यह भी लिखा है कि हमें शिक्षा का सर्वसाधारण में प्रचार करना चाहिए।

पारसी जाति का काम

भारतवर्ष के अनेक लोगों ने भारत की राजनैतिक सेवा की है। इधर कुछ दिनों से राजनैतिक क्षेत्र में पारसियों की कमी दिखलाई पड़ती है। यही कारण है कि सन् १९२७ ई० की कांग्रेस में डाक्टर अनसारी ने पारसियों की इस उदासीनता की ओर सब लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। इससे स्पष्ट है कि आज कल राजनैतिक क्षेत्र में पारसी लोग उतनी दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं, जितनी उन्हें लेनी चाहिए।

इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि पारसी लोग भारतवर्ष के राजनैतिक प्रश्नों में भाग ही नहीं लेते थे। यदि यह कहा जाय कि राजनैतिक क्षेत्र में सब से पहले पारसियों ने ही ताल ठोकना प्रारंभ किया था तो कुछ अनुचित न होगा। सर फ़ीरोज़शाह मेरवान जी मेहता का नाम कौन नहीं जानता? उन्होंने भारत की जो सेवा की उससे कौन परिचित नहीं है? उन्होंने सब से पहले राजनैतिक क्षेत्र में आन्दोलन प्रारंभ किया था।

इसके अतिरिक्त राजनैतिक क्षेत्र में जिन दूसरे पारसी

सज्जन ने पदार्पण किया उनका नाम दादाभाई नौरोज़ी है। अपने समय में वे भारत के एक ही नेता थे। वे केवल एक अच्छे वक्ता ही नहीं थे, किन्तु एक महापुरुष और प्रगाढ़ पंडित भी थे। इन्हीं पारसी सज्जन ने तीन बार कांग्रेस के सभापति के पद को सुशोभित किया था।

उन्हीं पारसी सज्जनों में से इस पुस्तक के नायक सर फ़ीरोज़शाह मेहता थे, जिन्होंने अपने जीवन को देश के उपकार में लगा दिया। इसमें संदेह नहीं कि पहले राजनैतिक क्षेत्र में पारसियों ने बहुत काम किया है। उनमें मिस्टर नौरोज़ी फ़ुर्दनजो और दीनशा वाचा और ताता का नाम उल्लेख योग्य है।

इन लोगोंने भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए बहुत प्रयत्न किया। भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध के इतिहास में इन लोगों का नाम सदा अमर रहेगा।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने भी इस स्वतंत्रता के युद्ध में बड़ा काम किया। जिस समय दादाभाई नौरोज़ी इँगलैंड में भारत की स्वतंत्रता के लिए काम कर रहे थे, उस समय सर फ़ीरोज़शाह मेहता भारत के लोगों को इसके लिए तैयार कर रहे थे।

जिस जाति ने लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने देश तक को छोड़ दिया, जिस जाति ने स्वतंत्रता के लिए अपने सारे भौतिक सुखों पर लात मार दी, जिस जाति ने सब कुछ त्याग दिया, परन्तु अपनी स्वतंत्रता नहीं

छोड़ी, उसी जाति ने पहले भारत की स्वतंत्रता के युद्ध में अग्रसर होने का निश्चय किया।

इन पारसी देशभक्तों को देखकर सहसा यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि भारत में सबसे पहले और भी किसी जाति ने भारत की ऐसी सेवा की है जैसी कि इन पारसी सज्जनों ने ?

इन सज्जनों ने भारत-माता के उद्धार के लिए उस समय काम किया जब भारत राजनैतिक अंधकार में डूबा हुआ था। एक प्रकार से पारसी लोगों का यह देश नहीं है, तथापि इन लोगों ने हम लोगों के लाभ के लिए भारत के उद्धार करने का पहले ही निश्चय कर लिया।

पारसी लोग प्रायः व्यापारी होते हैं। यदि ये चाहते तो सरकार का पक्ष लेने से उन्हें कई प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो जातीं, क्योंकि व्यापार से सरकार का भी संबंध है ही। परन्तु पारसी लोगों ने कभी ऐसा अपने मनमें सोचा ही नहीं। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने भी अपने मन में ऐसा विचार कभी नहीं आने दिया।

एक बार इसी संबंध में स्वयं पारसियों में मतभेद हो गया था। कुछ लोग चाहते थे कि सारे भारत के प्रश्न को छोड़कर पारसी जाति अपनी भलाई की ओर ही ध्यान दे। कुछ लोगों ने सर फ़ीरोज़शाह मेहता से कहा—यदि आप केवल पारसी लोगों की भलाई के लिए ही प्रयत्न करते तो बहुत अच्छा

होता। सारे भारत के प्रश्न के छेड़ने से आपकी अधिक शक्तियाँ हम लोगों के लाभ के लिए नहीं रह जातीं।

इस पर सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने कहा थाः—

"जो लोग कहते हैं कि पारसी लोगों को बिल्कुल अलग रहना चाहिए वे बड़ी भारी भूल कर रहे हैं। उन्हें यह बात भलीभाँति समझ लेनी चाहिए कि ऐसा करना केवल स्वार्थमय ही नहीं होगा, किन्तु अनुचित और मूर्खतापूर्ण भी होगा। यदि हम लोग ऐसा करें तो एक प्रकार से यह अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना होगा। इसका अन्तिम फल यही होगा कि कोई हम लोगों को जानेगा भी नहीं। इसमें संदेह नहीं कि हम लोगों की संख्या बहुत कम है, परन्तु इस अहाते में हम लोग भी एक शक्ति हैं। हम लोग पढ़े-लिखे हैं और व्यापारी हैं। हम लोगों को इस देश के बड़े बड़े कामों में अवश्य ही भाग लेना चाहिए। यदि हम भारत के अन्य लोगों से दूर रहें, यदि हम भारतवासियों से कोई सम्बन्ध न रक्खें, यदि हम लोग इनसे किसी प्रकार की सहानुभूति भी न दिखलावें और इनसे किसी प्रकार की सहयोगिता का सम्बन्ध न रक्खें तो भी हम लोग एक अच्छी, स्वतंत्र और व्यापारी जाति रहेंगे, तथा हम लोगों की कोई विशेष हानि न होगी, परन्तु उस दशा में हम लोग इस विशाल भारत के उच्च भाग्यों के बनानेवालों में न रह जायँगे।"

सर फ़ीरोज़शाह मेहता की इन सब बातों को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

कांग्रेस का काम

सर फ़ीरोज़शाह मेहता युवावस्था से ही कांग्रेस का काम करने लगे थे। जब वे देश के एक प्रधान नेता स्वीकार कर लिए गये, तब कांग्रेस का जन्म हुआ। इसलिए प्रथम कांग्रेस से ही इन्होंने इसमें काम करना प्रारंभ कर दिया था। सर फ़ीरोज़शाह मेहता कांग्रेस की एक प्रधान शक्ति थे।

जब कांग्रेस का काम हुआ, तब सरकार और भारत की जनता दोनों ने ही इसकी कड़ी समालोचना की। सब लोगों ने कांग्रेस की हँसी उड़ाई और उसे व्यर्थ बतलाया। सर फ़ीरोज़शाह मेहता कांग्रेस की ओर से उन सब आक्षेपों का उत्तर देते थे, जो कांग्रेस पर होते थे।

पहली कांग्रेस बम्बई में हुई। पाँच वर्ष के बाद कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन फिर बम्बई में ही हुआ। इस कांग्रेस के सभापति मिस्टर विलियम वेडरवर्न थे। स्वागत-कारिणी सभा के सभापति सर फ़ीज़शाह मेहता थे। इसी समय भारत की जनता ने कांग्रेस के ऊपर यह आक्षेप किया कि इतने दिनों में कांग्रेस ने क्या किया? इसका उत्तर सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने खूब ही अच्छा दिया था।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो स्वराज्य के लिए प्रयत्न तो नहीं करना चाहते, परन्तु स्वराज्य झपट लेना अवश्य चाहते हैं। इन्हें स्मरण रखना चाहिए कि स्वराज्य प्राप्त करने के लिए पहले प्रयत्न करना होगा और तब जाकर उन्हें सफलता मिल सकती है।

स्वागत-कारिणी सभा के सभापति की हैसियत से सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने एक बहुत ही अच्छा व्याख्यान दिया था। उसके एक अंश का उद्धृत करना बहुत ही आवश्यक जान पड़ता है। वह यह है:—

"हमारे शत्रु हम लोगों में फूट पैदा करके राज्य करना चाहते हैं। वे लोग चाहते हैं कि हम लोग आपस में लड़ते रहें और मिलकर उनका सामना न कर सकें।

इसमें तो किसी को लेशमात्र भी संदेह नहीं हो सकता कि भारत एक बड़ा भारी देश है। सम्पूर्ण भारत में एक ही बात का, एक ही सिद्धान्त का तथा एक ही मत का प्रचार होना असंभव है। यह तो कभी हो ही नहीं सकता कि सम्पूर्ण भारत में सब प्रकार की एकता एक साथ ही पाई जाय। यह केवल असंभव ही नहीं, अस्वाभाविक भी है। इसमें भी संदेह नहीं कि हम लोगों को मार्ग में ठहरना भी अवश्य पड़ेगा। हम लोगों में भी कुछ लँगड़े, कुछ गूँगे तथा कुछ अयोग्य

अवश्य होंगे। हम लोगों में कुछ ऊपर खींचनेवाले होंगे, उसी प्रकार से कुछ नीचे लेजाने वाले मनुष्य भी अवश्य ही रहेंगे।

सर सैयदअहमदखाँ और राजा शिवप्रसाद दोनों ही देश-भक्त थे, भारत की भलाई चाहनेवाले थे। दोनों हो देश की भलाई करना अपना कर्तव्य समझते थे। परन्तु इन लोगों में राजभक्ति की मात्रा भी अधिक थी। ये दोनों सज्जन मिल गये और कांग्रेस के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे। इन लोगों ने भो अपने को देश का शुभचिन्तक कहना प्रारंभ कर दिया और एक संस्था कांग्रेस से भिन्न नियत कर दी। इसी संबंध में मिस्टर ब्राइट ने भी लिखा है और यह उदाहरण मैंने उन्हीं के लेखों से लिया है, परन्तु इन दोनों सज्जनों की दशा अन्त में शोचनीय होगई। स्काटलैंड में सब कुत्ते, बालों से इस प्रकार ढक दिये जाते हैं कि पता ही नहीं चलता कि कौन सिर है और कौन पूँछ। इसी प्रकार इन लोगों की दशा हुई थी।"

आगे चल कर मेहता साहब ने कहा—"इसमें संदेह नहीं कि इनकी नसों में वास्तविक देशभक्ति की धारा नहीं बहती थी, किन्तु यह देशभक्ति ऊपरी और दिखावटी थी। यदि इन लोगों में वास्तविक देशभक्ति होती तो कभी इनकी ऐसी दुर्गति न होती, जैसी कि वास्तव में हुई है। इससे हमारे शत्रुओं ने भी एक बड़ा अच्छा सबक

सीखा है। इन लोगों ने राजाओं को भी अपनी ओर खींचने का ख़ूब गहरा प्रयत्न किया है। यहीं तक नहीं, इन लोगों ने किसानों को भी ख़ूब बहकाया है, परन्तु अब न तो राजा लोग ही इनके पक्ष में हैं और न किसान। इन सब बातों से प्रकट है कि देश का हृदय हम लोगों के साथ है। इसमें भी लेशमात्र संदेह नहीं कि देश हम लोगों की ईमानदारी, देशभक्ति तथा योग्यता में विश्वास करता है। हम लोगों का प्रधान कर्त्तव्य यही है कि हम देश को उचित मार्ग पर ले चलें।

यहाँ पर बंगाल और संयुक्त प्रान्त के डेलीगेटों से मैं विशेष रूप से एक बात कहना चाहता हूँ। इसका प्रधान कारण यह है कि मैंने इन दोनों देशों के संबंध में उल्लेख किया है। इसके उल्लेख करने का कारण यह नहीं है कि मैं अपने प्रान्त का गर्व कर रहा हूँ। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि इस प्रान्त में भी अंधे, लूले और लँगड़े हैं। इस देश में भी उक्त प्रकार के मनुष्यों का अस्तित्व पाया जाता है।

इसमें संदेह नहीं कि यहाँ भी उसी बीमारी के फैलाने वाले कीड़े हैं और हम लोगों को भी इस संक्रामक रोग ने तंग किया है। परन्तु हम लोगों में इसके कीड़े बहुत धीरे धीरे फैले थे। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि हम लोग बहुत ही शीघ्र इस रोग से मुक्त हो जायँगे।

जब हमारे प्रतिद्वन्दियों ने देखा कि इस प्रकार वे हम लोगों के बीच में फूट का बीज नहीं बो सकते तब इन

लोगों ने बड़ा ही उग्ररूप धारण कर लिया और हमें राजद्रोह तथा षड्यंत्र का दोषी बतलाना प्रारंभ कर दिया। इन लोगों ने ठीक वैसा ही काम किया जैसा कि प्राचीन काल में पाश्चात्य देश के मठ किया करते थे। वे लोग जिसका चाहते उसका अस्तित्व ही मिटा देते थे। वे एक प्रकार के मठाधीश हुआ करते थे। जिससे वे अप्रसन्न होते थे, उसे तंग करके ही छोड़ते थे। बहुतों को वे काफ़िर कहकर जला देते थे। हमारे प्रतिद्वन्द्वियों ने भी वैसा ही किया है। इन लोगों ने हम लोगों के विरुद्ध अराजकता और राजद्रोह का दोषारोपण किया। इसका यह फ़ल हुआ कि कुछ ऐसे लोग भी विमुख होगये जो वास्तव में हम लोगों के साथ सहानुभूति रखते थे। कांग्रेस के विरुद्ध भी दोष खड़े किये गये और कांग्रेस ने इन सब आक्षेपों का बड़ी वीरता से सामना किया। कांग्रेस ने इस संबंध में जिस धैर्य के साथ काम किया वह भी प्रशंसनीय है। कांग्रेस ने अपने विचारों, मंतव्यों और कामों का खुले शब्दों में प्रचार किया और अपने उद्देश्यों के पूरा करने का प्रयत्न किया। अन्त में कांग्रेस ने सिद्ध कर दिया कि उसके विरुद्ध जितने दोष लगाये गये थे, वे सब निराधार थे।

वे दिन कांग्रेस की परीक्षा के दिन थे। कांग्रेस उन परीक्षा के दिनों से अब निकल चुकी है। अभी मिस्टर केन ने कहा है कि हम कांग्रेसवाले उन अँगरेज़ों से अधिक राजभक्त हैं, जो भारत में रहते हैं। मिस्टर केन का यह कथन बिल्कुल सच है।

कांग्रेस का सभापतित्व

सब से बड़ी प्रतिष्ठा जो भारतवर्ष के लोग किसी देशभक्त को प्रदान कर सकते हैं, वह कांग्रेस का सभापति नियुक्त करना है। सर फ़ीरोज़शाह मेहता को यह प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी। प्रथम कांग्रेस बम्बई में हुई थी। पाँच वर्ष के बाद कांग्रेस फिर बम्बई में हुई। दूसरे वर्ष कांग्रेस कलकत्ते में हुई थी। इसी कलकत्ते की कांग्रेस में सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। यह कांग्रेस सन् १८९० ई० में हुई थी।

उस समय कांग्रेस से लोग हताश हो रहे थे। लोगों का कथन था कि कांग्रेस में कम-से-कम पचास हज़ार रुपये प्रति वर्ष खर्च हो जाते हैं और इससे वास्तव में लाभ कुछ भी नहीं होता। इसलिए कांग्रेस को तोड़ डालना ही अच्छा है। परन्तु इस वर्ष की कांग्रेस में एक ऐसी बात हुई जिससे सब लोगों का चित्त प्रसन्न हो गया।

बात यह हुई कि जब पाँचवीं कांग्रेस का अधिवेशन हुआ, तब उसके सभापति सर विलियम वेडरबर्न थे। इस कांग्रेस में मिस्टर चार्ल्स ब्रैडला भारतीय प्रश्नों के अध्ययन करने के लिए आये थे। इस कांग्रेस में मिस्टर चार्ल्स के आने का उद्देश्य भारतीय नेताओं से परिचित होना भी था। इसी अवसर पर चार्ल्स ब्रैडला ने कहा था:—"मैं यथाशक्ति भारत के लिए अवश्य लड़ूँगा और आशा करता हूँ कि आप लोगों को कुछ

राजनैतिक अधिकार अवश्य मिलेंगे। मैं भारत के राजनैतिक-सुधार के लिए भी अवश्य प्रयत्न करूँगा।"

इसमें सन्देह नहीं कि मिस्टर चार्ल्स ब्रैडला ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। उन्होंने भारतीय कौंसिल के बढ़ाने के लिए एक बिल पेश किया। उस समय सरकार से इतने अधिकार भी प्राप्त नहीं हुए थे। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने भी कांग्रेस के सभापति की हैसियत से इस बात पर बहुत ज़ोर दिया। सरकार ने भी इस सिद्धान्त को मान लिया। इसीलिए जब मिंटो-मार्ले-सुधार का जन्म हुआ, तब उसमें इस बात का विशेष ध्यान रक्खा गया।

बम्बई की कांग्रेस

पन्द्रह वर्ष के बाद बम्बई में कांग्रेस का फिर अधिवेशन हुआ। इस वर्ष सर हेनरीकाटन इसके सभापति चुने गये थे। अब कांग्रेस की बातें बहुत बदल गईं थीं। इस बार भी सर फ़ीरोज़शाह मेहता स्वागत-कारिणी सभा के सभापति चुने गये थे।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने अपने भाषण में इस बात को भलीभाँति सिद्ध कर दिया था कि कांग्रेस में ख़र्च हुए रुपयों और तमाशे में ख़र्च हुए रुपयों में अन्तर है।

अपने भाषण में सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने कहा थाः—

"मैं समझता हूँ कि व्यर्थ ही लोग कांग्रेस की निन्दा कर रहे हैं। इससे पवित्र, इससे महान् तथा इससे अधिक प्रसिद्ध और आवश्यक कार्य कोई हो हो नहीं सकता। हम लोग भारत के भिन्न भिन्न भागों से एक साल के बाद एक स्थान पर एकत्रित होते हैं। क्या इस पवित्र कार्य के लिए हम लोग साल भर में तीन चार दिन भी नहीं निकाल सकते ?

इसमें सन्देह नहीं कि हम लोगों के डेलीगेट किसी वैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार नहीं चुने जाते। परन्तु वह दिन अब अधिक दूर नहीं है, जब यह भी होने लगेगा।

भारत में कुछ लोग ऐसे हैं जो सब वस्तुओं की जाँच ऊपरी दृष्टि से करते हैं। जो लोग सब बातों की तह तक पहुँचना नहीं जानते वे ही कांग्रेस की निन्दा किया करते हैं।"

सर फ़ीरोज़शाह मेहता की लोकप्रियता

प्रायः देखा गया है कि जिससे सरकार प्रसन्न रहती है, उससे जनता प्रसन्न नहीं रहती और जिससे जनता प्रसन्न रहती है, उससे सरकार प्रसन्न नहीं रहती। परन्तु सर फ़ीरोज़शाह मेहता इस नियम के अपवाद थे। उनसे सरकार और जनता, दोनों ही प्रसन्न रहा करते थे।

कई बार इनमें और गरमदल वालों में अन-बन सी होगई, क्योंकि वे अपने सिद्धान्त से एक इंच भी टलना नहीं चाहते

थे। कई बार सरकार ने उन्हें अपनी मुट्ठी में कर लेने का प्रबल प्रयत्न किया। परन्तु सर फ़ीरोज़शाह मेहता सरकार के पंजे में नहीं फँसे।

इस प्रकार सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने दोनों ही बार यह सिद्ध कर दिया कि वे अपने सिद्धान्त के पक्के हैं। दोनों ही बार उन्होंने अपने प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय पाई। विपक्षी लोग मेहता साहब की बुद्धिमत्ता और प्रगाढ़ पाण्डित्य के क़ायल होगये। अपने इन्हीं गुणों के कारण महता साहब बहुत लोकप्रिय थे।

बम्बई कौंसिल में

सन् १८८६ ई० में सर फ़ीरोज़शाह मेहता बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य बनाये गये। उन्हें लार्ड रे (Reay) ने स्वयं चुना था। इन्हीं के समय में सन् १८८८ ई० की म्युनिसपैलिटी के एक प्रसिद्ध नियम ने क़ानून का रूप धारण किया था। इस बिल के पास कराने में सर फ़ीरोज़शाह मेहता का बड़ा हाथ था। जो लोग सर फ़ीरोज़शाह मेहता से भली भाँति परिचित हैं वे जानते हैं कि इस बिल के पास कराने में उन्हें कितना परिश्रम करना पड़ा था।

इस कौंसिल में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। इसके कामों में वे बहुत दिलचस्पी लेते थे। यही कारण है कि सर फ़ीरोज़शाह मेहता इस कौंसिल के आजीवन सदस्य रहे।

इस कौंसिल में सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने ख़ूब परिश्रम के साथ काम किया। सरकार तथा प्रजा दोनों ही इनके, कौंसिल के काम से प्रसन्न रहा करते थे। दोनों ही ने उनके इस काम की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

सालाना बजट के संबंध में यह प्रतिवर्ष व्याख्यान दिया करते थे और कभी कभी किसी विशेष बात की बड़ी कड़ी आलोचना किया करते थे। इनकी आलोचनाएँ तथ्यपूर्ण हुआ करती थीं। कभी कभी सरकार भी इनकी बातों को स्वीकार कर लिया करती थी।

बजट के संबंध में मत निर्धारित करना आसान बात नहीं है। इसमें बहुत लोग धोखा खा जाते हैं और निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कह सकते। इसके लिए संपत्ति-शास्त्र का जानना बहुत ही आवश्यक है। इसके अतिरिक्त बजट के संबंध में बहस करने के लिए जनता की सब ज़रूरतों का ज्ञान आवश्यक है। सर फ़ीरोज़शाह मेहता में ये सब गुण मौजूद थे।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता सरकार के उदार शत्रु थे। इसमें संदेह नहीं कि वे सरकार की कड़ी आलोचना करते थे। परन्तु वे सरकार के अच्छे गुणों की प्रशंसा भी करते थे। बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल में सर फ़ीरोज़शाह मेहता की ओर प्रायः वोट अधिक नहीं आते थे, परन्तु कौंसिल ने इनकी बुद्धिमत्ता और व्यावहारिक ज्ञान का लोहा मान लिया था।

इस कौंसिल में बौम्बे लैण्ड रेविन्यू बिल (लगान-क़ानून) पर भाषण देते हुए मेहता साहब ने बड़ी महत्त्वपूर्ण बातें कही थीं। इस बार उनकी वक्तृत्वशक्ति का अच्छा परिचय मिला था। उन्होंने सरकारी नीति का खुल्लमखुल्ला विरोध किया था। इस बार सर फ़ीरोज़शाह मेहता की पराजय हुई। आज भी भारतवर्ष के कृषकों का प्रश्न हल नहीं हुआ। आज भी गाँव का बनिया ख़ूब सूद लूटता है और आज भी भारत में दरिद्रता का अखंड राज्य है। जितनी पृथ्वी है, सब सरकारी है और कृषक लोग उसके केवल किरायेदार हैं। इस नीति से भारत की वास्तव में बड़ी हानि हुई है और अभी हानि होती ही चली जाती है। इस प्रश्न के हल करने के लिए सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने पहले ही घोर प्रयत्न किया था, परन्तु उन्हें इस काम में सफलता नहीं हुई।

हाँ, तो सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने उक्त बिल का घोर विरोध किया और अपनी बुद्धिमत्ता से सबके नाकों में दम कर दिया। परन्तु सरकारी सदस्यों के सामने इनकी एक न चली। इस-लिए सरकारी सदस्यों ने इस बिल को पास कर देने का ही अन्तिम निश्चय कर लिया। जब सर फ़ीरोज़शाह मेहता को पता चला कि ये लोग इस बिल को पास कर लेंगे, तब उन्होंने उस कौंसिल में रहना अपना अपमान समझा और कौंसिल के कमरे से बाहर निकल आये। उनके बाहर निकल आने पर सरकारी सदस्यों ने उस बिल को पास कर दिया।

वायसराय की कौंसिल में

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने वायसराय की कौंसिल में भी बहुत प्रशंसनीय काम किया। जबतक वे कौंसिल में थे, तबतक कौंसिल के ऊपर उनका बड़ा प्रभाव रहा।

यहाँ पर भी बम्बई कौंसिल की तरह काम होता था और जिस क़ानून को सरकार पास करना चाहती थी, उसे पास कर लेती थी। विरोध करनेवाले मुँह ताकते रह जाते थे।

पहले वर्ष महता साहब ने बजट की बड़ी कड़ी आलोचना की। सरकार और विशेषकर मैकडोनेल-साहब और सर जेम्स वेस्टलैंड से इसी वर्ष इनकी मुठ-भेड़ हो गई थी। मैकडोनेल-साहब ने पुलिस-बिल को पास कराने का विचार किया था। इसके अनुसार भारत के लोग बिना मामला चलाये ही क़ैद किये जा सकते थे। इस बिल का फ़ीरोज़शाह मेहता ने बड़ा विरोध किया।

इस बिल का एक स्वर से सारे भारत ने विरोध किया था। यहाँ तक कि बंगाल के चेम्बर-आफ़-कामर्स ने भी घोर विरोध किया था। यह संस्था एक राजभक्त संस्था है। उसने भी इस बिल को बिल्कुल ही पसन्द नहीं किया।

इस सम्बन्ध में सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि ऐसा करना बड़ा अन्याय है। इसलिए सरकार के कुछ लोग इनसे रुष्ट हो गये।

सबसे अधिक प्रशंसा उनकी तब हुई जब उन्होंने बजट के सम्बन्ध में व्याख्यान दिया। सर फ़ीरोज़शाह मेहता का बजट सम्बन्धी व्याख्यान बहुत प्रसिद्ध है। इससे उनकी योग्यता तथा बुद्धिमत्ता का अच्छा परिचय मिलता है। वायसराय की कौंसिल में इस व्याख्यान का एक ऊँचा स्थान है। इसमें सन्देह नहीं कि सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने बजट के सम्बन्ध में दो बार और व्याख्यान दिया था, परन्तु वे व्याख्यान पहले व्याख्यान की तरह प्रसिद्ध नहीं हैं।

बम्बई-विश्वविद्यालय

सर फ़ीरोज़शाह मेहता बहुत दिनों तक बम्बई विश्वविद्यालय के सिनेट में रहे। यहाँ पर भी इन्होंने बड़ा प्रशंसनीय काम किया था। प्रारम्भ से ही सर फ़ीरोज़शाह मेहता शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देते थे। बम्बई-विश्वविद्यालय में आकर इन्होंने शिक्षा के लिए और भी अधिक काम किया।

जब सर फ़ीरोज़शाह मेहता बम्बई की कौंसिल में थे, तब भी वे इसी बात के लिए अधिक ज़ोर दिया करते थे कि शिक्षा-विभाग में अधिक धन लगाना चाहिए।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता का यह विचार था कि भारतवर्ष में प्रारम्भिक शिक्षा की अपेक्षा उच्च शिक्षा में अधिक धन लगाना चाहिए। इतना ही नहीं, वे शिक्षा को उच्च बनाने का भी प्रयत्न करते रहे।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता शिक्षा-विभाग तथा शिक्षा सम्बन्धी सब दोषों से भलीभाँति परिचित थे। वे भलीभाँति जानते थे कि इसमें सरकार का भी दोष है। उनका विचार था कि सरकार को शिक्षा में और अधिक धन व्यय करना चाहिए। सर एलेक्ज़ेंडर ग्रांट ने भी इस बात को स्वीकार किया था।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता कहा करते थे कि यदि सरकार अपनी कुल आमदनी का पचासवाँ हिस्सा भी शिक्षा में ख़र्च करे तो बड़ा अच्छा हो।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता उस समय भी यह प्रयत्न कर रहे थे कि विश्व-विद्यालय केवल परीक्षा ही न लिया करें, किन्तु शिक्षा देने का भी प्रबन्ध करें। इसमें सन्देह नहीं कि उस समय तो इसमें विशेष काम नहीं हुआ, परन्तु आज कल तो भारत के सब विश्वविद्यालयों में पढ़ाने का भी प्रबन्ध हो गया है।

बम्बई प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन

इसमें संदेह नहीं कि सन् १८८५ ई० के पहले भी भारत तथा बम्बई के लोग राजनैतिक क्षेत्र में काम करते थे। परन्तु सन् १८८५ ई० में बम्बई में एक सभा नियत हुई जिसने राजनैतिक क्षेत्र में भारत की अच्छी सेवा की। इस सभा ने राजनैतिक क्षेत्र में संगठन का एक प्रकार से अच्छा काम किया।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता इस सभा के जन्म-दाताओं में से एक थे। वे इसके सभापति थे। प्रारंभ से मृत्यु-पर्यन्त इस सभा के वे सभापति रहे।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सन् १८८५ का वर्ष भारतीय राजनीति के लिए बहुत प्रसिद्ध है। इसी वर्ष पहली कांग्रेस बम्बई में हुई थी।

इसके बाद सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने सदा राजनैतिक क्षेत्र में भाग लिया। इतना ही नहीं, अब वे राजनैतिक क्षेत्र में आगे ही रहते थे।

इसी सभा (बम्बई प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन) के द्वारा सर फ़ीरोज़शाह मेहता अपने विचारों को बहुत दिन तक प्रकट करते रहे। सर फ़ीरोज़शाह मेहता के प्रयत्नों के कारण इस सभा का नाम इँगलैंड में भी प्रसिद्ध होगया था। सरकार भी इस सभा की प्रतिष्ठा करती थी।

कभी कभी तो सरकार को भी इस सभा का लोहा मानना पड़ता था। सन् १८९४ में सरकार को ख़र्चे की बड़ी कठिनाई पड़ी। बहुत लोगों ने इस कमी के कारण को समझ ही नहीं पाया। किसी ने इस कमी का कुछ कारण बतलाया और किसी ने कुछ। सर जेम्सवेस्टलैंड-साहब ने इस कमी तथा गड़बड़ी का कारण विनिमय बतलाया। किसी ने भी सर जेम्स वेस्टलैंड के इस मत का खंडन नहीं किया। परन्तु उक्त एसोसिएशन ने उनके मत की ख़ूब धज्जियाँ उड़ाई

और लेखों से सिद्ध कर दिया कि सरकार के ख़र्चे की इस कमी का कारण विनिमय नहीं है, किन्तु इसका प्रधान कारण सरकारी ख़र्चे का बढ़ जाना ही है। यह लेख इतना विशद था, इसकी युक्तियाँ इतनी प्रबल थीं, इसके अंक इतने अकाट्य थे कि सब लोगों को सर फ़ीरोज़शाह मेहता की बातों को स्वीकार करना पड़ा।

इस संबंध में पीछे से सर आकलैंड कालविन तथा सर डेविड बारबर ने भी खोज करना प्रारंभ कर दिया था। इन लोगों ने भी अन्त में सर फ़ीरोज़शाह मेहता की बातों का समर्थन किया था।

इससे यह कभी नहीं समझ लेना चाहिए कि केवल इसी बार सर फ़ीरोज़शाह मेहता का लोहा सरकार को मानना पड़ा था। ऐसी घटनाएँ कई बार होगई थीं।

कुछ लोगों ने इस सभा की घोर निन्दा की थी। इन लोगों का कथन है कि इस सभा ने अपने काम को बहुत धीरे धीरे किया है। परन्तु कुछ लोग इसके पक्ष में यह भी कहते हैं कि यह कोई बुरी बात नहीं है।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता की प्रतिष्ठा

जिस प्रकार सर फ़ीरोज़शाह मेहता भारत की जनता की सेवा करते थे उसी प्रकार जनता भी उन्हें प्रतिष्ठा की दृष्टि से

देखती थी। सन् १८९५ ई० में बम्बई प्रान्त की कानफरेंस ने उनकी बड़ी प्रतिष्ठा की। इसी प्रकार कलकत्ता-निवासियों ने भी सर फ़ीरोज़शाह मेहता को एक आमंत्रण पत्र दिया। इस पत्र पर कलकत्ते के कई हज़ार मनुष्यों के हस्ताक्षर हुए थे। इन मनुष्यों में डबल्यू० सी० बैनर्जी का नाम उल्लेखनीय है।

बंबई के कारपोरेशन ने मेहताजी को दो बार अपना सभापति बनाया। केवल सर फ़ीरोज़शाह मेहता को ही इस कारपोरेशन के दुबारा सभापति होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अभी तक सब लोग उनके सभापतित्व के कार्य की प्रशंसा किया करते हैं। कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि कारपोरेशन का ऐसा दूसरा सभापति कभी नहीं आया। एक बार और सर फ़ीरोज़शाह मेहता सन् १९०५ ई० में इसके सभापति बनाये गये थे।

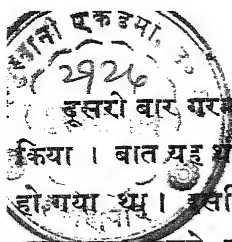
जिन लोगों ने भारत के वर्त्तमान इतिहास का अध्ययन किया है, वे भलीभाँति जानते हैं कि सन् १९०५ ई० में प्रिंस-आफ़ वेलस भारत में पधारे थे। इस साल सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने बड़ी योग्यता से अपने काम का संपादन किया।

सरकार भी उनकी बड़ी प्रतिष्ठा करती थी। सरकार ने उनके कामों से प्रसन्न होकर उन्हें के० सी० आई० ई० की पदवी दी थी। अब इसका मूल्य बहुत घट गया है। पहले ऐसी बात नहीं थी। इन सब बातों से स्पष्ट है कि भारत में सर फ़ीरोज़शाह मेहता की बड़ी प्रतिष्ठा थी।

म्युनिसिपैलिटी का चुनाव

इसमें सन्देह नहीं कि सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने भारत की बड़ी सेवा की। वे स्वतंत्र प्रकृति के मनुष्य थे। उन्होंने सदा सत्य के सामने ही सिर झुकाया। वे चापलूसी करना नहीं जानते थे। इस स्वतंत्र प्रकृति के कारण बहुत लोग उनसे बुरा मानते थे। दो बार उनके शत्रुओं ने उन्हें नीचा दिखाने का बड़ा प्रयत्न किया। एक बार मिस्टर हैरिसन नामक एक अँगरेज़ सज्जन ने उनके विरुद्ध एक बड़ा भारी आन्दोलन किया। सन् १९०७ ई० में मिस्टर हैरिसन ने म्युनिसिपैलिटी के चुनाव में सर फ़ीरोज़शाह मेहता के हराने का भगीरथ प्रयत्न किया, परन्तु इस काम में उन्हें सफलता नहीं हुई। सर फ़ीरोज़-शाह मेहता म्युनिसिपैलिटी के चुनाव में चुन लिये गये। परन्तु हैरिसन साहब का प्रयत्न भी बिल्कुल निष्फल नहीं हुआ, क्योंकि सर फ़ीरोज़शाह मेहता के अतिरिक्त उन के दल के सब लोग हार गये थे।

जबतक सर फ़ीरोज़शाह मेहता बम्बई कारपोरेशन में थे, तबतक उनकी इच्छा के विरुद्ध उसमें कोई काम नहीं हो सकता था। जब सरकार कोई काम अपने मन के अनुसार करना चाहती थी, तब वह उसे उसी समय मीटिंग में पेश करती थी जब सर फ़ीरोज़शाह मेहता उसमें उपस्थित न रहते थे।



दूसरी बार गरम दल के नेताओं ने इनके विरुद्ध आन्दोलन किया । बात यह थी कि गरम दल और नरम दल में मतभेद होगया था। इसलिए कांग्रेस में भी दो दल होगये थे। परन्तु इस झगड़े का प्रधान कारण व्यक्तिगत विचार था। सूरत की कांग्रेस में तो इन दोनों दलों में लाठी चलने तक की नौबत आगई थी । यहाँ पर इतना लिख देना आवश्यक जान पड़ता है कि इस मतभेद के समय लोग सर फ़ीरोज़शाह मेहता के पक्ष ही में अधिक थे ।

जब ये लोग सर फ़ीरोज़शाह मेहता का विरोध कर रहे थे, तब भारत की विचित्र दशा थी। उन दिनों गरम दलवालों का बोलबाला था। जो लोग सरकार को गाली देते थे, वे ही देशभक्त और वीर समझे जाते थे। इस बात के सोचने-समझनेवाले आदमी बहुत कम थे कि देश का कल्याण किस बात में है । भारतवर्ष एक बड़ा भारी देश है, इसमें कई भाषाएँ बोली जाती हैं, यह कई प्रान्तों में बँटा हुआ है। प्रत्येक प्रान्त के लोग दूसरे प्रान्त से कई बातों में भिन्न हैं इसके अतिरिक्त इस देश के लोग कई भिन्न भिन्न धर्मों के माननेवाले हैं। इसलिए भारत का प्रश्न बड़ा पेचीदा है। सर फ़ीरोज़शाह मेहता कहा करते थे कि हमें वैध उपायों का ही आश्रय लेना चाहिए।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने सदा इसीके लिए प्रयत्न किया और इस विषय में उनके अनुगामियों ने भी उनका

ख़ूब साथ दिया। उस समय भारत में बहुत ही कम आदमी ऐसे थे जो अपने उत्तरदायित्व को समझते हों। सर फ़ीरोज़शाह मेहता बड़े ज़िम्मेदार नेताओं में से थे। सूरत की कांग्रेस के बाद कांग्रेसवालों ने सर फ़ीरोज़शाह मेहता की बातों को स्वीकार कर लिया।

उस समय भारत की दशा तो विचित्र थी ही, किन्तु बम्बई की दशा भी कम विचित्र न थी। बम्बई के गवर्नर साहब भी ख़ूब मनमानी कर रहे थे। उनका नाम सर जार्जक्लार्क था। वे जो चाहते थे, वही कर लेते थे। ऐसे समय में सर फ़ीरोज़शाह मेहता ऐसे व्यक्ति की बहुत आवश्यकता थी, क्योंकि वे अपने उत्तरदायित्व को ख़ूब समझते थे।

सहनशीलता

जब फ़ीरोज़शाह मेहता देखते थे कि मैं भारत का उपकार कर सकूँगा, तब तो वे सब कामों को छोड़ कर उसमें दत्तचित्त हो जाया करते थे। परन्तु जब वे यह देखते थे कि किसी काम को हाथ में लेने से कोई विशेष लाभ न होगा, तब वे उस काम में हाथ नहीं देते थे। जब उन्होंने देखा कि गरम दलवाले अपने सिद्धान्त के अनुसार काम कर रहे हैं तब इन्होंने उन्हें छेड़ना अच्छा नहीं समझा, वरन् पबलिक के कामों में भाग लेना ही छोड़ दिया, क्योंकि वे गरम दल के नेताओं के मार्ग में रोड़े अटकाना नहीं चाहते थे।

जब लार्ड मार्ले का सुधार प्रकाशित हुआ, तब सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने असंतोष प्रकट किया। इस सुधार में साम्प्रदायिक वोटों को उत्तेजना दी गई थी और वे साम्प्रदायिक वोटों के पक्ष में न थे। इस संबंध में उन्होंने अपनी सम्मति स्पष्ट रूप से प्रकट की थी।

मेहताजी साम्प्रदायिक वोट को साम्प्रदायिक झगड़ों की जड़ समझते थे। इसीलिए 'बौम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसियेशन' ने इसका खुल्लमखुला विरोध किया।

प्रवासी भारतीयों का हित

सर फ़ीरोज़शाह मेहता सदा भारतवासियों की भलाई की बातें सोचा करते थे। इस कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि वे सदा उन्हीं भारतवासियों के बारे में सोचा करते थे जो भारतवर्ष में रहते हैं, किन्तु वास्तव में वे उन सब भारतवासियों के बारे में भी सोचा करते थे जो भारत के बाहर रहते थे। उदाहरण के लिए दक्षिणी अफ्रिका के निवासियों का नाम लिया जा सकता है। एक बार आगाख़ाँ के सभापतित्व में हुई सभा में सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने दक्षिणी अफ्रिका के निवासी भारतीयों के दुःख का बड़ा मर्म-भेदी चित्र खींचा था।

दक्षिणी अफ्रिका के भारतीयों के लिए उनका द्वार सदा खुला रहता था। वे प्रायः उनकी दुःखमय कहानी पर आँसू बहाया करते थे।

दुबारा विलायत-यात्रा

सन् १६१० ई० में सर फ़ीरोज़शाह मेहता फिर इँगलैंड चले गये। जब वे इँगलैंड पहुँचे तब वहाँ के भारतीयों तथा अँगरेज़ों ने उनका ख़ूब स्वागत किया।

पहले भी, पढ़ने के लिए सर फ़ीरोज़शाह मेहता इँगलैंड गये थे। इसलिए उनके पुराने मित्र भी वहाँ बहुत थे। उन लोगों ने इनका ख़ूब स्वागत किया। इस बार भी सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने भारत की भलाई के लिए ख़ूब काम किया। उन्होंने भारतसचिव तथा पार्लमेंट के सदस्यों से मिल कर भारत के लिए ख़ूब आन्दोलन किया।

प्रत्यागमन

इँगलैंड से लौटने के बाद सर फ़ीरोज़शाह मेहता का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। तथापि उन्होंने पबलिक-कामों से मुँह नहीं मोड़ा।

उन्होंने सिनेट तथा कारपोरेशन दोनों में बड़े उत्साह के साथ काम किया। वहाँ जब कोई कठिन समस्या उत्पन्न होती थी, तब वे उसको सुलझाने का भरसक प्रयत्न करते थे।

इसी समय पबलिक-सरविस कमीशन के सामने उन्हें गवाही देनी पड़ी। इस गवाही में उन्होंने अपने विस्तृत अनुभव तथा पाण्डित्यपूर्ण विवेचना का अच्छा परिचय दिया था।

उसी समय लार्ड विलिंगडन महोदय बम्बई के गवर्नर के पद पर नियुक्त हुए। वे बहुत ही अच्छे शासक थे। उनका सर फ़ीरोज़शाह मेहता से बड़ा घनिष्ठ संबंध था। लार्ड विलिंगडन मेहताजी को बहुत चाहते थे और उनकी बुद्धिमत्ता में विश्वास रखते थे। जब कोई विकट समस्या उन के सामने आती थी, तब वे सर फ़ीरोज़शाह मेहता की सम्मति अवश्य लेते थे।

लार्ड विलिंगडन साहब ने सर फ़ीरोज़शाह मेहता से प्रसन्न होकर उन्हें बम्बई विश्वविद्यालय का वाइस चांसलर नियुक्त कर दिया। इसी वर्ष सर फ़ीरोज़शाह मेहता को डाक्टर की उपाधि भी मिली। यह विश्वविद्यालय की सब से ऊँची उपाधि है।

'बौम्बे क्रानिकल' का जन्म

पहले बम्बई हाते में एक भी राष्ट्रीय अँगरेज़ी दैनिक समाचार-पत्र नहीं था। यह एक बड़ा भारी अभाव था। सर फ़ीरोज़शाह मेहता का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने इसके लिए प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया। इसी समय "टाइम्स आफ़ इंडिया" नामक गोरे पत्र ने सर फ़ीरोज़शाह मेहता तथा उनके दलवालों के विरुद्ध लेख लिखना प्रारम्भ कर दिया। उन्हीं दिनों सन् १९१३ में सर फ़ीरोज़शाह मेहता के प्रयत्नों से 'बौम्बे क्रानिकल' नामक अँगरेज़ी दैनिक समाचारपत्र निकला।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता और लार्ड रिपन

लार्ड लिटन के समय में कई ऐसे काम हुए जिनसे भारतीय जनता को बड़ा कष्ट हुआ। इनके समय में केवल दुःखद क़ानून ही नहीं बने, किन्तु इन्होंने अपने अन्य कामों से भी भारतीय जनता को बहुत कष्ट पहुँचाया। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट उन्हीं के शासनकाल में पास हुआ। उन्होंने रुई पर कर लगाया था। अफ़ग़ानिस्तान के अमीर के साथ लड़ाई भी उन्होंने लड़ी थी। जब लार्ड रिपन भारत के वाइसराय होकर यहाँ आ गये, तब भारत के लोगों को बड़ा संतोष हुआ। यहाँ आकर उन्होंने भारतवासियों के लाभ के लिए काम करना प्रारम्भ कर दिया।

लार्ड रिपन ने पहले तो मालगुज़ारी की दशा का सुधार किया। उनके कामों से सब लोगों के मन में नई नई आशाओं का संचार होने लगा।

जब लार्ड रिपन का कार्यकाल समाप्त होगया और जनता को इस बात का पता चला कि वे अब इँगलैंड चले जायँगे तब सबका मन अधीर हो उठा। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने लार्ड रिपन को कुछ और समय तक वाइसराय रहने देने के लिए प्रार्थना-पत्र भेजा। इस प्रार्थना-पत्र पर बहुत लोगों के हस्ताक्षर हुए थे। परन्तु यह प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई।

कुछ विशेषताएँ

सर फ़ीरोज़शाह मेहता अपने मुँह से कभी कोई ऐसी बात नहीं कहते थे जिससे किसी दूसरे के हृदय को चोट पहुँचे सत्य के लिए वे सबका सामना करने को तैयार रहते थे। वे प्रत्येक मनुष्य से प्रसन्नतापूर्वक मिलते थे। यदि कोई आदमी उनसे वाद-विवाद करता था तो वे शान्त रहते थे। भारत में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने विरोधियों से बहुत बुरा मानते हैं और उनका मुँह देखना नहीं चाहते। परन्तु सर फ़ीरोज़शाह मेहता की प्रकृति ऐसी नहीं थी।

एक बार सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने कहा था:—प्रायः ऐसा होता है कि हम किसी बात को भली भाँति समझ नहीं पाते। उस दशा में हम ठीक ठीक नहीं कह सकते कि कौन सी बात सत्य है और कौन सो असत्य। इसलिए हम लोगों को विरोधियों की सम्मति की भी प्रतिष्ठा करनो चाहिए।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता बड़े मिलनसार थे। वे सब तरह के आदमियों से मिलते थे। साधारण श्रेणी के लोगों से मिलना भी वे अपनी शान के ख़िलाफ़ नहीं समझते थे।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता समय का बहुत ख़याल रखते थे और एक मिनट भी व्यर्थ नहीं खोते थे। जो लोग उनसे मिलने जाते थे, वे उन्हें किसी न किसी काम को करते हुए ही पाते थे। उन्हें पढ़ने का तो व्यसन सा होगया था।

जब वे देखते थे कि मेरे पास कोई ऐसा आदमी पहुँच गया है जो मेरे समय को ख़राब करेगा तो वे एक चाल चलते थे। वे उसे कोई काम करने को दे देते थे। काम न कर सकने के कारण वह आदमी फिर उनके पास आता ही न था।

कुछ फुटकर बातें

सर फ़ीरोज़शाह मेहता अपने नौकरों पर सदा कृपा किया करते थे। जब उनके नौकर कोई अपराध करते थे, तब वे उन पर बिगड़ते नहीं थे। जब कोई नौकर बहुत बड़ा अपराध कर बैठता था, तब वे उसे अपने यहाँ से निकाल दिया करते थे, परन्तु उसे क़ैद कराकर बड़े घर की हवा खिलाने का प्रयत्न नहीं करते थे।

एक दिन सर फ़ीरोज़शाह की धर्मपत्नी तरकारी कच्ची रह जाने के कारण अपने एक नौकर को फटकार रही थीं। उन्होंने उस नौकर की ख़ूब ख़बर ली। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने उस समय तो अपनी धर्मपत्नी से कुछ नहीं कहा। परन्तु जब नौकर चला गया तब उन्होंने कहा—क्या माजरा था? इसके जवाब में उनकी धर्मपत्नीजी ने सारी बातें कह सुनाईं। तब सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने कहा—इसमें नौकर का कुछ भी दोष नहीं है।

धर्मपत्नी—नौकर का कुछ भी दोष नहीं है?

सर फ़ीरोज़शाह मेहता—हाँ।

धर्मपत्नी—तब किसका दोष है ?

सर फ़ीरोज़शाह मेहता—तुम्हारा ।

धर्मप०—मेरा ?

सर फ़ी०—हाँ तुम्हारा ।

धर्मप०—क्या आप हँसी कर रहे हैं ?

सरफ़ीरो०—नहीं ।

धर्म०—तब ऐसा क्यों कह रहे हैं ?

सरफ़ीरोज़०—मैं सच कह रहा हूँ ।

धर्मप०—तरकारी कच्ची है । इसमें मेरा क्या दोष है ?

सर फ़ीरोज़०—तुम्हें निगरानी करनी चाहिए ।

धर्मपत्नी—निगरानी तो मैं करती हूँ ।

सर फ़ी०—ओह ! तरकारी थोड़ी सी कच्ची रह जाने के कारण तुम्हें इस प्रकार नहीं बिगड़ना चाहिए था । मैं उसी समय बोलना चाहता था । परन्तु मैंने तुम्हारे मालिकपने में फ़र्क़ डालना पसंद नहीं किया । नौकर लोग तो ऐसा करते ही हैं । इसमें नौकर का कुछ भी दोष नहीं है । उससे तो इससे अधिक आशा ही नहीं करनी चाहिए ।

इसमें सारा दोष निगरानी करनेवाले का है । इस प्रकार नौकरों से कभी न बिगड़ा करो । इनसे डर तथा प्रेम दोनों के द्वारा काम लेना चाहिए । पहले उन्हें समझा दिया करो और तब उन पर कड़ी दृष्टि रक्खा करो । वे स्वयं अच्छा काम करेंगे । यदि कोई काम बिगड़े तो उन्हें समझा दिया करो ।

यदि बार बार के समझाने से भी वे उचित रीति से काम न करें तो उन्हें निकाल दिया करो।

इसमें तो कुछ भी संदेह नहीं कि सर फ़ीरोज़शाह मेहता की दृष्टि बड़ी पैनी थी। उन्होंने स्पष्ट रीति से देश के भविष्य को देख लिया था। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने उस मार्ग को भली भाँति देख लिया था, जिस पर चलकर हम लोग अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। जैसे कोई आदमी पहाड़ की चोटी पर चढ़कर पहाड़ के नीचे के भाग को भली भाँति देख लेता है, उसी प्रकार से सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने इस भारत के भविष्य को देख लिया था।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने अपने हृदय में निराशा को तो कभी स्थान ही नहीं दिया। वे वास्तव में एक आशा-वादी थे। इसमें संदेह नहीं कि जो लोग परिश्रमी नहीं होते, वे ही प्रायः निराशावादी हो जाया करते हैं। वे प्रायः कहा करते थे कि जो आदमी परिश्रमी नहीं होता, जो आदमी कार्य के महत्त्व को नहीं जानता, जो आदमी अपनी शक्तियों को नहीं जानता, वही निराशावादी हो जाया करता है।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने कई बार कहा था—

यदि हमारे देशवासी उत्साह तथा विश्वास के साथ परिश्रम करेंगे तो भारत का भविष्य उज्वल हो जायगा और भारतवर्ष की उन्नति होगी।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता उद्योग की बड़ी प्रशंसा करते थे। मनुष्य के जीवन में वे उद्योग को बड़ा महत्त्वपूर्ण विषय समझते थे। वे उद्योग को भारत की उन्नति का एक प्रधान कारण समझते थे। उद्योग की सहायता से ही उन्होंने इतनी उन्नति की थी। इसीलिए वे उद्योग को इतना महत्त्व देते थे। वे भारत की अवनति का प्रधान कारण भारतीय लोगों की उद्योग-हीनता समझते थे।

सन् १८९१ ई० में बीजापुर और सोलापुर के ज़िलों में अकाल पड़ा। अकाल-पीड़ित मनुष्यों के दुःख को दूर करने के लिए उन्होंने बड़ा प्रयत्न किया। इस काम में श्री गोपाल-कृष्ण गोखले ने भी बड़ी सहायता दी थी। निम्न लिखित श्लोक सर फ़ीरोज़शाह मेहता के लिए अक्षरशः सत्य है:—

नरपति हित-कर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके
जन-पद-हितकर्ता त्यज्यते पार्थिवेन
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने
नृपति जन पदानां, दुर्लभः कार्यकर्त्ता।

इसका भावार्थ यह है—यदि कोई मनुष्य राजा की भलाई करता है तो उससे जनता द्वेष करने लगती है और जब कोई मनुष्य जनता की भलाई करता है तब उसे राजा त्याग देता है। इसलिए राजा और प्रजा दोनों की भलाई करना परस्पर विरोधी बातें हैं। इसलिए राजा और प्रजा दोनों का समान हित चाहनेवाले पुरुष इस संसार में बहुत कम मिलते हैं।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता ऐसे ही मनुष्यों में से एक थे। राजा और प्रजा दोनों ही उनको चाहते थे। उनमें सबसे बड़ा तथा सर्वश्रेष्ठ गुण उनकी स्वदेशभक्ति थी। वे पारसी थे। परन्तु पारसी होने पर भी, वे भारत की बड़ी प्रशंसा करते थे।

वे प्रायः कहा करते थेः—"भारतवर्ष पर अनेक हमले हुए हैं और इसे बहुत से अत्याचारों का सामना करना पड़ा है। तथापि इसने अपनी जातीयता, धर्मपद्धति तथा सामाजिक नियमों में विशेष परिवर्त्तन नहीं किया। इसका प्रधान कारण यही है कि भारत में भी एक ऐसी शक्ति का अस्तित्व पाया जाता है जिसने इसके रूप को वर्त्तमान साँचे में ढाल दिया है।"

सर फ़ीरोज़शाह मेहता की हार्दिक इच्छा थी कि अब भारतवर्ष अपनी घोर निद्रा को छोड़े और अपना कल्याण करने के लिए कटिबद्ध हो जाय। कई बार सरकार ने उन्हें राजद्रोही समझ लिया और उनके राजनैतिक आन्दोलनों को शंका की दृष्टि से देखा। परन्तु वे अपने पथ से विचलित न हुए।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता कहा करते थे कि इँगलैंड भारतीय जनता की उच्चाकांक्षाओं की पूर्ति करने का प्रयत्न नहीं करता, इसी कारण बृटिशभारत में प्रतिभाशाली मनुष्यों की प्रतिभा पूर्णरूप से विकसित नहीं होने पाती।

स्वर्गवास

सन् १९१५ ई० में सर फ़ीरोज़शाह मेहता का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। इस समय उनकी अवस्था सत्तर वर्ष की होगई थी। उनकी बीमारी के कारण जनता चिन्तित थी। उन्होंने सन् १९१५ ई० में बम्बई में कांग्रेस को निमंत्रित किया था। इसलिए वे कांग्रेस की तैयारी कर रहे थे।

इस साल सर फ़ीरोज़शाह मेहता ही स्वागत-कारिणी कमेटी के सभापति चुने गये थे। उन्होंने एस० पी० सिन्हा को कांग्रेस के सभापति के पद को स्वीकार करने के लिए भी राज़ी कर लिया था। कांग्रेस के लिए बम्बई में ख़ूब तैयारी हो रही थी। इसी समय बम्बई से यह समाचार आया कि सर फ़ीरोज़शाह मेहता की दशा शोचनीय हो रही है और संभवतः वे इस बार नहीं बचेंगे। परन्तु फिर वहाँ से यह समाचार आया कि अब उनकी अवस्था सुधर रही है और शीघ्र ही वे अच्छे हो जायँगे। परन्तु कांग्रेस तक जीना, उनके भाग्य में नहीं लिखा था, ५ वीं नवम्बर सन् १९१५ ई० को अचानक उनका स्वर्गवास हो गया। उनकी आत्मा सत्तर वर्ष की पुरानी भौतिक ठठरी को छोड़ कर स्वर्ग में चली गई। आज भारतीय राज-नैतिक अखाड़े का एक वीर पहलवान उठ गया! आज पारसी-जाति का एक प्रधान स्तंभ टूट गया! आज भारत का एक अमूल्य रत्न खो गया!

क्षण भर में यह दुःखद समाचार चारों ओर फैल गया और झुंड के झुंड लोग सर फ़ीरोज़शाह मेहता के घर के पास एकत्रित हो गये। सब पत्रों में बड़े बड़े लेख निकलने लगे।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के बारे में 'टाइम्स आफ़ इंडिया' ने लिखा था:—"जिस प्रकार सर फ़ीरोज़शाह मेहता अपने शत्रुओं पर आक्रमण करते थे, वह प्रशंसनीय था। परन्तु वे अपने शत्रुओं के आक्षेपों को भी धैर्यपूर्वक सहते थे। इस संबंध में वही एक ऐसे भारतवासी थे जो अपने शत्रुओं के साथ भी न्याय करते थे।"

जब कभी मतभेद का प्रश्न उठता है तब भारत में लोग गाली-गलौज़ का बाज़ार गरम कर देते हैं और प्रायः तू-तू-मैं-मैं की नौबत पहुँच जाती है। परन्तु सर फ़ीरोज़शाह मेहता इन सब बातों के ऊपर थे। मतभेद होना स्वाभाविक ही है, परन्तु मतभेद के लिए सर फ़ीरोज़शाह मेहता द्वेष नहीं करते थे।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता की मृत्यु से एक ऐसा स्थान ख़ाली हो गया जो कभी भरा नहीं जा सकता। भारत में आज जितने आदमी दिखलाई पड़ते हैं, उनमें से कोई भी इस रिक्त स्थान को भर नहीं सकता।

मेहताजी में जाति तथा सांप्रदायिक पक्ष का तो नाम भी नहीं पाया जाता था। वे अपने को पहले भारतीय और बाद को पारसी समझते थे। उन्हें भारतीय होने का बड़ा गर्व था।

यहाँ पर हम एक ऐसी घटना का उल्लेख कर देना उचित समझते हैं जो पहले नहीं कही गई।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के संबंध में भारत के लगभग सभी पत्रों ने शोक प्रकट किया था। सन् १९१५ ई० में भारत के वाइसराय लार्ड हार्डिंज महोदय थे। उस समय बम्बई के गवर्नर लार्ड विलिंगडन साहब थे। बम्बई में लार्ड विलिंगडन के सभापतित्व में एक भारी शोक-सभा हुई थी। उसमें बम्बई के बहुत लोग एकत्रित हुए थे। इस सभा में वायसराय ने गवर्नर लार्डविलिंगडन साहब के यहाँ निम्नलिखित तार भेजा था —

"सर फ़ीरोज़शाह मेहता की मृत्यु के संबंध में शोक प्रकाशित करने तथा स्मारक स्थापित करने के लिए जो शोक-सभा होने वाली है, उससे मैं अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रकट करता हूँ। वे केवल एक बड़े प्रतिष्ठित पारसी ही नहीं थे, किन्तु एक भारी देशभक्त और भारतीय भी थे। भारत में इस समय उनके से मनुष्यों की बड़ी आवश्यकता थी। कृपा कर के मेरी सहानुभूति के संबंध में उनकी धर्मपत्नी से भी अवश्य कह दीजिएगा। मैं उनके स्मारक के लिए एक हज़ार रुपया देता हूँ।"

सर फ़ीरोज़शाह मेहता का एक स्मारक भी बनवाया गया था और इसमें वायसराय ने भी १००० रु० दिया था। तथापि हम लोगों को सर फ़ीरोज़शाह मेहता ऐसे महापुरुष

के लिए जितना प्रेम दिखाना चाहिए था, उतना नहीं दिखलाया। भारतवर्ष के लोग अपने नेताओं का उचित मान करना नहीं जानते। इसीलिए तो आज भारत की यह दशा है। हम लोग अपने बड़े बड़े कवियों, समाज-सेवकों तथा महापुरुषों की प्रतिष्ठा करना नहीं जानते। इस संबंध में हम लोगों को फ्रांस से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। फ्रांस ने अपने देश के महापुरुषों के लिए कई बार बहुत ही अधिक सम्मान प्रकट किया है। यहाँ पर मौलियर की घटना का उल्लेख कर देना आवश्यक जान पड़ता है।

जिन लोगों ने फ्रांस के साहित्य का थोड़ा भी अध्ययन किया है वे मोलियर के नाम से भली भाँति परिचित होंगे। मोलियर फ्रांस देश का एक प्रसिद्ध नाटक-लेखक है। इसने अपनी भाषा में कई नाटक लिखे हैं। ये सब नाटक हास्यरस-प्रधान हैं। फ्रांस के साहित्य में इन नाटकों का अच्छा स्थान है।

कुछ समालोचकों ने इन्हें शेक्सपियर की कोटि का कवि स्वीकार किया है। मोलियर के संबंध में हिन्दी में भी एक पुस्तक निकली है। जो लोग मोलियर के बारे में अधिक जानना चाहें, वे उसे देख सकते हैं।

मोलियर ने एक नाटक-मंडली खोल रक्खी थी। इसी मंडली में वह अपने सब नाटकों को खेलता था। इस काम से उसे धन और यश दोनों मिले थे।

फ्रांस में फ्रेंच एकेडेमी नामक एक संस्था है। उसमें सदस्यों की संख्या केवल सौ रहती है। उक्त संस्था में सदस्यों की संख्या एक सौ से अधिक कभी हो ही नहीं सकती। इसके सदस्य बड़े बड़े प्रसिद्ध मनुष्य ही हुआ करते हैं। इसका सदस्य होना प्रगाढ़ पाण्डित्य तथा विस्तृत अध्ययन का एक अच्छा सर्टिफिकेट है। सम्पूर्ण फ्रांस में जो विद्या, बुद्धि अध्ययन तथा प्रतिभा में सर्वश्रेष्ठ गिने जाते हैं, वे ही इसके सदस्य हो सकते हैं। इसीलिए इसका सदस्य होना बड़ा कठिन है। जब किसी सदस्य की मृत्यु हो जाती है तब यह संस्था सारे फ्रांस में से एक विद्वान को चुन लेती है। इसलिए इस संस्था का सदस्य कोई ऐसा ही व्यक्ति हो सकता है जो सारे फ्रांस में प्रसिद्ध हो और जो सारे फ्रांस के सब विद्वानों से अधिक विद्वान समझा जा सके।

एक बार इस संस्था में एक स्थान रिक्त हुआ। सारे फ्रांस में इस बात की धूम मच गई कि देखें इस स्थान पर कौन सदस्य चुना जाता है। सारे फ्रांस से एक आदमी को खोज निकालना वास्तव में बड़ा कठिन है। कुछ लोगों ने य के पक्ष में अपनी राय दी और कुछ लोगों ने र के पक्ष में। फ्रांस के कुछ लोगों ने मोलियर के पक्ष में भी अपनी सम्मति प्रकट की। परन्तु मोलियर के विपक्षियों ने गरज कर कहा—"जो मनुष्य थिएटर के लिए पुस्तकों की रचना करके अपना पेट पालता है, जो मनुष्य हम लोगों के पुराने आदर्शों की धज्जियाँ उड़ाता

है, जो मनुष्य अपनी प्राचीन प्रणालियों की प्रतिष्ठा नहीं करता, उसे हम लोग फ्रेंच एकेडेमी का सदस्य नहीं बना सकते। जो मनुष्य हम लोगों की हँसी उड़ाया करता है, उसे हम लोग अपनी एकेडेमी का सदस्य कभी नहीं बना सकते।"

इसी संबंध में दोनों पक्षों में खूब मत-भेद होगया और खूब वाद-विवाद हुआ। अन्त में फ्रांसवालों ने मोलियर को उस संस्था का सदस्य नहीं चुना।

जब इन सब बातों का पता मोलियर को चला तब वह बहुत ही दुःखित हुआ। अन्त में उसने कहा—"कोई चिन्ता नहीं। यदि फ्रांस आज मेरा इस प्रकार निरादर कर रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है एक दिन फ्रांस की यह संस्था अपने निश्चय पर पश्चात्ताप करेगी।"

कौन जानता था कि मोलियर की यह भविष्य-वाणी है ?

फ्रांस देश-निवासियों ने किसी दूसरे को उक्त संस्था का सदस्य चुन लिया। उसके थोड़े दिनों के बाद ही मोलियर की मृत्यु होगई। मृत्यु के बाद मोलियर का सुन्दर चित्र फ्रांसवासियों के सामने खिंच गया। अब उनकी मोह-निद्रा टूट गई और उनकी आँखें खुल गईं। अब फ्रांसवालों ने मुक्त-कंठ से स्वीकार कर लिया कि वास्तव में मोलियर एक बड़ा भारी आदमी था। उन लोगों ने इस बात को भी स्वीकार कर लिया कि मोलियर के रिक्त स्थान को पूरा करनेवाला अब कोई नहीं रहा। फ्रांसवालों ने अपनी ग़लती स्वीकार की।

परन्तु उन्होंने अपनी ग़लती स्वीकार करके ही मोलियर के प्रति अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं कर ली। इन लोगों ने मोलियर के जीवन-काल में तो उसके लिए उचित सम्मान प्रकट नहीं किया, परन्तु ये लोग मृत-मोलियर की उचित प्रतिष्ठा करने के लिए व्यग्र हो उठे और इसके लिए वे भरसक प्रयत्न करने लगे।

जिस सभा ने एक दिन मोलियर को महापुरुष नहीं स्वीकार किया था, उसी सभा ने, उसके मरने के बाद उसे एक महापुरुष स्वीकार कर लिया। जिस सभा ने पहले उसे अपना सदस्य नहीं स्वीकार किया था, उसके मरने के बाद वही सभा उसे सदस्य बनाने के लिए व्यग्र हो उठी। फ्रांस की उस महासभा ने अपने पाप के प्रायश्चित्त करने का अन्तिम निश्चय कर लिया।

मोलियर की पत्थर की एक मूर्त्ति बनाई गई। यही मूर्त्ति इस संस्था के सभा-भवन में स्थापित की गई। यह मूर्ति किसी छोटे पत्थर में नहीं, किन्तु एक बड़े भारी पत्थर में लगाई गई थी,। उस पत्थर में उस संस्था ने मोलियर को उसके जीवन-काल ही में सदस्य न बनाने के लिए खेद प्रकट किया।

बस, सभा ने इस मूर्ति की स्थापना करके ही संतोष नहीं किया। उसने एक और नियम बनाया। संस्था ने अपने सदस्यों की संख्या घटा कर ३९ कर दी।

आज तक फ्रेंच एकेडेमी के केवल ६६ ही सदस्य होते हैं। मोलियर की उस मूर्ति को मिला कर सौ की संख्या पूरी की जाती है।

भारत ! तू भी अपने महापुरुषों का उचित सम्मान करना कब सीखेगा ?

अनुकरणीय बातें

अब हम सर फ़ीरोज़शाह मेहता के जीवन की कुछ अनुकरणीय बातों पर प्रकाश डालते हुए इस बात पर विचार करना चाहते हैं कि उनके पुण्य चरित्र से हमारे भारतीय विद्यार्थी क्या शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं ? पहली बात शिक्षा-सम्बन्धी है। मेहता साहब उच्च कोटि की शिक्षा पाये हुए व्यापार, क़ानून, राजनीति आदि विषयों के विद्वान थे। उनकी शिक्षा का उद्देश बड़ा पवित्र और ऊँचा था। महज़ पोथियों को रटकर यूनिवर्सिटी की डिग्रियाँ लेने में ही उनकी शिक्षा का प्रश्न हल नहीं हो गया। पढ़-लिख कर, कोई छोटी-मोटी सरकारी नौकरी करके, अपने पेट की ज्वाला शान्त करने को, सारी शक्तियाँ लगा देने में ही उनकी शिक्षा का वास्तविक उद्देश पूरा नहीं हो गया। बलिक, अनेक उच्च विषयों का ज्ञान प्राप्त कर तथा उनसे अपनी प्रतिभा और मानसिक शक्तियों का यथोचित विकाश कर, अपने मन और मस्तिष्क के साथ

सम्पूर्ण शक्तियों को लोक-सेवा के पवित्र काम में अर्पित कर देना ही उनकी शिक्षा का उद्देश था।

मेहता साहब ने शिक्षा ज्ञान के लिए प्राप्त की, न कि केवल नौकरी के लिए। फिर शिक्षा प्राप्त कर, उन्होंने उसका पूरा उपयोग अपने देश की भलाई के लिए किया। शिक्षा से उनका उच्चतम बौद्धिक विकास हुआ। शिक्षा से मनुष्य को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान होता है। यही कारण है कि उच्च शिक्षा प्राप्त कर सबसे आवश्यक बात मेहताजी के सामने देश-सेवा की आई।

देश की दुर्दशा का चित्र उनके सामने था। उन्होंने देखा कि करोड़ों भारतीय अकर्मण्यता और आलस्य के गर्त्त में गिरे हुए ग़ुलामी के असहनीय कष्ट भोग रहे हैं, परन्तु, यहाँ तक उनका पतन हुआ है कि वे अपनी पीड़ा को अनुभव तक कर सकने में असमर्थ हैं। भारतीय जनता को अपने अधिकारों तक का ज्ञान नहीं है। सर फ़ीरोज़शाह मेहता को यह बात बहुत खटकी। उन्होंने देश में राजनैतिक जागृति फैलाने के लिए बहुत उद्योग किया। वे कहा करते थे कि देश के उद्धार की एक मात्र दवा स्वराज्य है। जब तक भारतीय जनता सजग होकर अपने आपको राजनैतिक बन्धनों से मुक्त नहीं करती, तब तक उसकी दुर्दशा दूर न होगी। जीवन भर सर फ़ीरोज़शाह मेहता अपने अनूठे ढँग से देश की सेवा करते रहे। अपने ज्ञान को देश-

सेवा के पवित्र काम में लगाकर सचमुच उन्होंने अपनी शिक्षा को सार्थक कर दिखाया। किसी पराधीन देश के युवकों की शिक्षा का इससे अधिक ऊँचा और अनुकरणीय उद्देश और क्या हो सकता है कि शिक्षा से वे अपनी बौद्धिक शक्तियों का यथोचित विकास कर, उन्हें देश-सेवा की पवित्र वेदी पर समर्पित कर दें ?

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के आत्म-चरित को पढ़ कर दूसरी बात सामने आती है विदेश-यात्रा की। भारतीय युवक विदेश-यात्रा क्यों करें ? इस प्रश्न पर प्रत्येक समझदार युवक को विचार करना चाहिए। विदेश-यात्रा में काफ़ी रुपया ख़र्च होता है। आज भारत के साधारण स्थिति के ग़रीब युवक यूरुप और अमेरिका की यात्रा नहीं कर सकते। इसलिए यह निश्चित है कि भारत के धनी-मानी युवक ही विदेश-यात्रा करने में समर्थ हैं।

सर फ़ीरोज़शाह विलायत किस लिए गये, वहाँ जाकर उन्होंने कितने परिश्रम से ज्ञानार्जन किया, उस ज्ञान को उन्होंने किस काम में लगाया, आदि बातें इस पुस्तक में लिखी जा चुकी हैं। उनसे स्पष्ट है कि भारतीय युवकों को विदेशों में जाकर बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है। आज-कल जो युवक विदेशों में जाते हैं, उनमें से अधिकांश युवक अपने देश में लौट कर, अपने परिवार और देश के लिए उतने उपयोगी सिद्ध नहीं होते, जितने कि होने चाहिए। कितने ही युवक तो विलायती चमक-

दमक के फेर में पड़कर अपने जीवन को बिल्कुल नष्ट कर डालते हैं। वे बिल्कुल निकम्मे होकर देश को लौटते हैं। वे यूरुपीय वेष-भूषा के बिल्कुल ग़ुलाम बनकर लौटते हैं। पाश्चात्य देशों से हमारे युवक विलासी बनकर वापस आते हैं। जो बातें उन्हें विदेशों में सीखनी चाहिए, उनकी ओर वे ध्यान ही नहीं देते।

विलायत में सर फ़ीरोज़शाह मेहता का ध्यान सदा अपने लक्ष्य पर रहा। उन्होंने अपने समय की एक एक मिनट को अमूल्य समझ कर उसका उपयोग किया। भारतीय युवक विदेशों में जाकर शिक्षा, विज्ञान, कला-कौशल, व्यापार, शिल्प का चमत्कार देखें। अपनी अपनी प्रवृत्ति के अनुसार उन विषयों का अध्ययन करें और उनका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर अपने देश को लौटें। वे वहाँ देखें कि छोटे से छोटा मज़दूर भी अपने अधिकारों के लिए किस प्रकार जान दिये मरता है और सब कुछ देकर भी अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करता है। भारतीय युवक अमेरिका और यूरुप की भूमि पर अपनी दृष्टि फैलाकर देखें कि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति आज़ादी से किस प्रकार अपने देश के भाग्य-निर्माण में भाग लेता है और इस प्रकार वह देश का काम करते हुए कितना गौरव अनुभव करता है। आज संसार के कोने कोने में स्वतंत्रता की सुरभित समीर बहती जा रही है। छोटे से छोटा देश भी पराधीनता के बन्धन काट फेंकने के लिए छटपटा रहा है। ग़ुलामी, अन्याय, दुःख, दारिद्र्य, अज्ञान को दूर कर आज संसार का प्रत्येक देश

आज़ादी से सम्मानपूर्वक दुनियाँ में ज़िन्दा रहने के लिए किस प्रकार उद्योगशील है? जर्मनी, टर्की, मिस्र, आयर्लैण्ड, चीन आदि देशों के युवक अपने राष्ट्रीय उत्थान के लिए किस प्रकार सर हथेली पर लिये घूमते हैं? ये बातें हैं जिन पर भारतीय युवक विदेशों में जाकर अपनी नज़र डालें और फिर विचार करें कि वे अपने ग़रीब देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्या हल करने के लिए क्या उद्योग कर सकते हैं। भारतीय युवक विदेशों में जाकर प्रत्येक क्षण अपनी ज़िम्मेदारी अनुभव करें इस बात की कि, वे वहाँ ग़रीब भारत का पैसा ख़र्च कर रहे हैं, उस पैसे का वे सदुपयोग करें। वे केवल विदेशों की ऊपरी चमक-दमक में पैसा व्यर्थ बर्बाद न करें और अपने चरित्र को बिगाड़ कर दुनियाँ में भारत को बदनाम न करें। वे विदेशों के समुन्नत और समृद्धि-शाली होने के कारणों की जाँच-पड़ताल करें। वे सचमुच ऊपरी बातों पर ध्यान न देकर, विदेशों की उन भीतरी बातों को देखें जिनसे आज वे विज्ञान और कला-कौशल के बल पर शक्तिशाली और समृद्ध होकर दुनियाँ में ऊँचा मस्तक किये खड़े हैं।

फ़ीरोज़शाह मेहता के जीवन की तीसरी विशेषता है साम्प्रदायिक भावना का त्याग। मेहता साहब पारसी थे। पारसी जाति पर उनका प्रेम होना स्वाभाविक था। किन्तु, उन्होंने जो काम किये वे केवल पारसी जाति के हित की दृष्टि से नहीं, किन्तु, समूचे भारत की भलाई को ध्यान में रख कर

किये। वे सच्चे देश-भक्त थे। जाति-गत भावना उनमें छू तक न गई थी। उनकी दृष्टि में समस्त भारतीयों की एक जाति है। किसी जाति विशेष के वे पक्षपाती नहीं थे।

फ़ीरोज़शाह की दृष्टि सचमुच बड़ी व्यापक थी। उसपर राष्ट्रीयता का वह गहरा रंग चढ़ा था, जिसकी लालिमा उनके प्रत्येक काम पर जीवन के अन्तिम समय तक दिखाई दी। असल बात यह है कि राष्ट्रीयता के बिना पराधीन भारत का त्राण हो ही नहीं सकता। इतने बड़े देश में इतनी अधिक जातियाँ, उपजातियाँ हैं कि उनके हितों को सामूहिक रूप से सम्बद्ध किये बिना, किसी साम्प्रदायिक सिद्धान्त पर उनके आर्थिक और राजनैतिक प्रश्नों का निपटारा हो ही नहीं सकता। किसी भी जाति के कट्टर और अन्ध-विश्वासी मूर्ख लोग, प्रत्यक्ष बातों से आँखें बन्द करके, भले ही किसी जाति विशेष के हित का राग अलापें, किन्तु, देश के कितने ही विद्वान, राजनीतिज्ञ और समझदार लोगों का यह मत है कि भारत की विभिन्न जातियों के आर्थिक और राजनैतिक हित एक ही हैं। इन प्रश्नों पर जाति-गत भावों से प्रेरित होकर विचार करना नासमझी है। भारत की हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, ईसाई आदि जातियों के हित समान हैं। इन जातियों के सम्मेलन से एक भारत राष्ट्र का निर्माण करना है। इसलिए प्रत्येक समझदार भारतीय का यह कर्तव्य है कि वह जाति-गत विषैली भावना से पीछा छुड़ा कर, प्रत्येक बात पर व्यापक और दूरदर्शित

पूर्ण राष्ट्रीय दृष्टि से विचार करना सीखे। इसीमें समस्त देश का कल्याण है।

मेहता साहब के जीवन की चौथी बात है, उनकी कांग्रेस में श्रद्धा। राष्ट्रीय काम के लिए देश में अखिल भारतीय संस्था कांग्रेस है। सर फ़ीरोज़शाह मेहता कांग्रेस के एक सुदृढ़ स्तम्भ थे। कांग्रेस को अधिक व्यापक और बलशाली बनाने के लिए उन्होंने बड़ा उद्योग किया। कांग्रेस को सुदृढ़ बनाकर सचमुच उन्होंने देश की बड़ी सेवा की। कांग्रेस हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि भारत को प्रायः समस्त जातियों की संस्था है। उसमें किसी जाति विशेष के लिए कोई रिआयत नहीं। उसकी नींव विशुद्ध राष्ट्रीयता के सिद्धान्त पर डाली गई है। स्वाधीन भारत में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस ही देश की पार्लामेंट होगी। उसके सामने देश की समस्त जातियों, और समुदायों के हितों की दृष्टि से विचार होता है। आज देश में कांग्रेस के अतिरिक्त और कोई देश की सबसे बड़ी प्रातिनिधिक सार्वजनिक संस्था नहीं है। देश की राजनैतिक मुक्ति के लिए अब तक कांग्रेस ने अनेक बड़े बड़े आन्दोलन किये हैं। उनसे कांग्रेस के, देश में दिन पर दिन बढ़ने वाले प्रभाव और शक्ति का पता चलता है। जिस कांग्रेस का नवजात पौधा सर फ़ीरोज़शाह मेहता ऐसे नररत्नों ने अपने अथक परिश्रम से सींचा था, वह आज यदि फल-फूल कर देश में नवजीवन की ज्योति जगा रही है, तो इसमें ताज्जुब

ही क्या है ? कांग्रेस के प्रति मेहता साहब की अखण्ड श्रद्धा थी। कांग्रेस के कल्पवृक्ष में वे सचमुच भारतोत्थान की समस्या का हाल देखते थे। इसी कारण कांग्रेस के कल्पवृक्ष को सिञ्चित कर उसे हरा-भरा बनाये रखने में, अपने जीवन में उन्होंने कोई बात उठा नहीं रखी।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के जीवन की पाँचवीं बात कौंसिल-प्रवेश के सम्बन्ध में है। देश की कौंसिलों में प्रायः धनी-मानी, राजा, नव्वाब, तालुक़ेदार लोग जाया करते हैं। वे वहाँ जाते हैं भारतीय जनता के प्रतिनिधि बन कर, उसकी भलाई करने के लिए। परन्तु, कौंसिल में जानेवालों में ऐसे बहुत कम आदमी होते हैं जो इस देश की दीन-दुःखी जनता के भले के लिए अपनी आवाज़ उठाते हैं। पिछले दो चुनावों की बात छोड़ दीजिये। इससे पहले देश के कुछ बड़े आदमियों ने कौंसिलों को महज़ एक खिलवाड़ बना रखा था। वे वहाँ अधिकारियों की हाँ-में-हाँ मिलाया करते थे। प्रायः उनमें इतना साहस न होता था कि प्रजा की न्यायोचित माँगों को स्पष्ट रूप से कौंसिल में पेश तक कर सकें। फिर जनता का अहित करने वाले क़ानूनों पर बहस करना तो बहुत दूर की बात थी।

परन्तु, सर फ़ीरोज़शाह के कौंसिल-प्रवेश का उद्देश बिलकुल दूसरा था। वे बड़ी निर्भीकता से जनता की माँगें कौंसिल में रखते थे और उचित और क़ानूनी मसलों पर सरकार की धाँधली का विरोध करने में वे तनिक भी आगा-पीछा नहीं

करते थे। हाँ, उनके विरोध में उदारता और नरमी ज़रूर होती थी। असल बात यह थी कि वे केवल निरे 'कुर्सी-तोड़ राजनीतिज्ञ' (Arm-chair-Politician) नहीं थे। उनमें अधिकारियों के क़ानूनी दाव-पेचों को समझने, और उनके भीतर से अपने मतलब की बात खोज निकालने का दिमाग़ था। मेहता साहब ने कौंसिल में अपने उस अद्भुत क़ानूनी दिमाग़ का भारतीय जनता के हित के लिए यथोचित उपयोग किया। उनकी भाषण-शैली और तर्क सचमुच अनूठा था। जिस समय सर .फ़ीरोज़शाह कौंसिल में बजट पर भाषण देते थे, उस समय बड़े बड़े बाल की खाल निकालनेवाले अँग्रेज़ अधिकारी उनके मुँह की ओर देखते रह जाते थे। बहस के मसलों पर उनका अध्ययन बड़ा गहरा होता था। किसी भी बात को वे बड़ी गम्भीरता के साथ समझते और कहते थे।

मेहता साहब का कौंसिल का काम देश के लिए बहुत ही उपयोगी था। वे कौंसिल में झूठी शान और बड़प्पन का सर्टीफ़िकेट लेने के लिए कभी नहीं गये। किन्तु, कौंसिल-प्रवेश में उनका उद्देश सदा देश-हित करने का रहा, और उनके जीवन से यह स्पष्ट है कि अपने ढँग से अपनी नीति के अनुसार उन्होंने कौंसिल में जाकर लोकोपयोगी काम करने में कोई बात उठा नहीं रखी।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता के जीवन की छठीं महत्त्वपूर्ण बात स्थानीय संस्थाओं की मेम्बरी की है। वर्षों तक वे बम्बई

कारपोरेशन के मेम्बर रहे। नगर के स्वास्थ्य, सफ़ाई, शिक्षा आदि की उन्नति के लिए उन्होंने जो काम किये, उनसे प्रत्येक नागरिक बहुत कुछ सीख सकता है। मेहता साहब का प्रबन्ध-कौशल अनुपम था। कारपोरेशन में अपने योग्यतम व्यक्तित्त्व के प्रभाव से उन्होंने बहुत काम किया। उनके व्यक्तित्त्व का अधिकारी तक लोहा मानते थे। मेहता साहब के सामने अधिकारियों की धाँधली नहीं चल पाती थी। प्रत्येक विभाग के हिसाब आदि की जाँच-पड़ताल वे बड़ी कड़ाई के साथ करते थे। यही कारण था कि मेहता साहब के ज़माने में बम्बई कारपोरेशन का काम बहुत ही सुव्यवस्थित ढँग से चला।

आजकल देश की स्थानीय संस्थाओं—डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्डों—में बड़ी अन्धेर-गर्दी मची रहती है। उनमें निःस्वार्थ लोक-सेवक बहुत कम पहुँच पाते हैं। इन संस्थाओं के मेम्बर अप्रत्यक्ष रूप से प्रायः स्वार्थ-साधन करते पाये जाते हैं। रिश्वत का बाज़ार गरम रहता है। अपने और अपने मित्रों के स्वार्थ के सामने सार्वजनिक हित बालाए-ताक़ रख दिया जाता है। चुनाव में जो आपा-धापी मचती है, जो अनुचित ढँग अख़्तयार किये जाते हैं, उनसे कोई भी समझदार और भला आदमी घृणा किये बिना नहीं रह सकता। अनेक जगहों में म्युनिसिपैलिटियों और डिस्ट्रिक्टबोर्डों में स्वार्थ-लोलुप रद्दी आदमी भर जाते हैं। वे वहाँ अपने गुट्ट बना कर स्वार्थ

सिद्ध करते हैं। इस दशा में सार्वजनिक हित को बहुत धक्का पहुँचता है। इससे जनता की बड़ी हानि है। ज़रूरत है इस बात की कि प्रत्येक डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्ड में लोक-सेवी व्यक्ति ही मेम्बर चुने जाया करें। ऐसा होने पर सार्व-जनिक स्वास्थ्य, सफ़ाई, शिक्षा आदि के महकमों का काम बहुत सुव्यवस्थित ढँग से चलाया जा सकता है, और स्थानीय संस्थाओं के शासन में आये दिन जो रिश्वतख़ोरी, कुप्रबन्ध, स्वेच्छा-चारिता आदि की शिकायतें सुनी जाती हैं, उनका एक दम अन्त हो सकता है।

मेहता साहब के जीवन में हम सातवीं अनुकरणीय बात यह पाते हैं कि सार्वजनिक क्षेत्र में वे बड़ी उदारता से काम लेते थे। सार्वजनिक प्रश्नों पर जिस व्यक्ति से मत-भेद होता था, उसके साथ वे सदा सद्व्यहार से काम लेते थे। अपने प्रतिद्वन्द्वी पर व्यक्तिगत और घृणित आक्षेप करना तो वे जानते ही नहीं थे। यदि कोई उन पर नीच आक्षेप करने का दुस्साहस कर भी बैठता था, तो, उसका न्यायोचित उत्तर देने में वे बड़ी सहनशीलता दिखाते थे। सार्वजनिक जीवन में अनेक अवसर ऐसे आये, जब मेहता साहब ने अपने विरोधियों के प्रति सराहनीय उदारता दिखा कर अपने हृदय की महानता का परिचय दिया था। अधिकारियों के भी वे उदार शत्रु थे। उनके किसी भी लेख और भाषण में अनुचित कटुता नहीं आने पाती थी। उनके इस व्यवहार की प्रशंसा उनके विरोधी भी करते हैं।

सार्वजनिक क्षेत्र में आज-कल दल-बन्दी बड़ा उग्र रूप धारण करती है। जो लोग सस्ती नेतागिरी लूटना चाहते हैं, और नाम के भूखे हैं, वे बात बात में गाली-गलौज़ पर उतर आते हैं। अपने विरोधियों को वे पशु से भी बुरा समझते हैं। यदि कोई सार्वजनिक प्रश्नों पर उनसे मत-भेद रखे, तो, वे उसे शत्रु समझने लगते हैं। अख़बारों में व्यक्ति-गत आक्षेपों से कालम के कालम रँगे रहते हैं। परन्तु, देश के हित के लिए इस प्रकार की कटुता बहुत बुरी है। इस कटुता से सार्वजनिक क्षेत्र गन्दा होता है। कार्य्य-कर्त्ताओं में बैर बढ़ता है। इससे देश के शत्रुओं को हमारी मूर्खता पर हँसने का मौक़ा मिलता है।

सार्वजनिक क्षेत्र में इस प्रकार की दलबन्दी से हमारे पतन का जीता-जागता परिचय मिलता है। सर फ़ीरोज़शाह मेहता ने इस ढँग की बड़ी निन्दा की थी। वे अपने से भिन्न मत रखने वाले पर व्यक्ति-गत आक्षेप करना बहुत बुरा समझते थे। वे कहा करते थे कि हमें अपने विरोधियों की बातों का ठण्डे दिल से, तर्क-पूर्ण और उचित उत्तर देना चाहिए। विरोधी दल के आक्षेपों का उत्तर देते समय किसी भी दशा में हमें मनुष्यता, सभ्यता और शिष्टता को खो नहीं देना चाहिए। सार्वजनिक क्षेत्र में मेहताजी के चरित्र से हम सहनशीलता का पाठ हृदयङ्गम कर सकते हैं। इसमें शक नहीं कि सहन-शीलता का भाव सार्वजनिक कार्य्यकर्त्ताओं को, मत-भेद रखने

पर भी, देश-हित के प्रश्नों पर मिल-बैठ कर विचार करने को प्रेरित करेगा। किसी भी क्षेत्र में दल-बन्दी होना का बुरा नहीं, किन्तु, विभिन्न दल के लोगों में परस्पर द्वेष और शत्रुता का बढ़ना देश के लिए बहुत ही हानिकारक है।

सर फ़ीरोज़शाह मेहता बहुधा प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा पर आँसू बहाया करते थे। अपने देश-वासियों की सेवा के आगे उन्हें प्रवासी भारतीयों की याद नहीं भूली। वे कहा करते थे कि दक्षिण अफ्रीका, केनिया, मारिशस, फिजी आदि स्थानों में जो भारतीय रहते हैं, उनके हित का हमें सदा ध्यान रखना चाहिए। यथाशक्ति जो कुछ हमसे बने, वह प्रवासी भारतीयों के लिए करते रहना चाहिए।

प्रवासी भारतीयों की अवस्था सचमुच बड़ी करुणा-जनक है। वे अपना ख़ून-पसीना एक करके उपनिवेशों की भूमि को उपजाऊ बनाते हैं, किन्तु, उसका सारा लाभ उन उपनिवेशों में रहनेवाले गोरे उठाते हैं। इतना ही नहीं वहाँ गोरे लोग काले भारतीयों पर जो अमानुषिक ज़ुल्म करते हैं, उन्हें याद कर हृदय काँप जाता है। भारत में प्रवासी भारतीयों की सहायता के लिए व्यावहारिक रूप से कोई उद्योग नहीं होता। हाँ, कुछ इने-गिने लोग हैं, जो अपने लेखों और भाषणों से प्रवासी भारतीयों की समस्याओं पर प्रकाश डालते रहते हैं। क्या सागर-पार हमारी मातृभूमि के वरपुत्र, भारत की सभ्यता

और संस्कृति के उपासक अपने प्रवासी भारतीयों को हमें भूल जाना चाहिए? इसके उत्तर में प्रत्येक समझदार भारतीय के मुँह से यही निकलेगा कि भारत के प्रवासी भारतीयों की पूरी ख़बरगीरी रखनी चाहिए और समय समय पर यथाशक्ति उनकी सेवा के लिए कोई बात उठा न रखी जानी चाहिए।

देश में राष्ट्रीय भावों का प्रचार करने और लोक-मत जाग्रत करने के लिए सर फ़ीरोज़शाह ने 'बौम्बे क्रानिकल' को जन्म देकर पत्र-सम्पादन-कला का एक अच्छा उदाहरण रखा। अपने जन्म-काल से अब तक देश के राजनैतिक क्षेत्र में इस पत्र ने बड़ा काम किया है। देश में नित्य नये अख़बारों का जन्म होता है, परन्तु, देश-सेवा के आदर्श को लेकर बहुत थोड़े पत्र सफलतापूर्वक चल पाते हैं। अनेक अख़बार तो महज़ रोटी कमाने के लिए निकाले जाते हैं। उनका उद्देश होता है टका-पंथी। जिसने दो पैसे सम्पादक की जेब में डाल दिये, बस, उनका अख़बार उसीके गीत गाने लगा। टका-पंथी अख़बारों के सामने उनका निज का कोई आदर्श नहीं होता। प्रायः उनकी बातों का जनता में अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। यदि आज-कल के पत्र-सञ्चालक और सम्पादक, इस क्षेत्र में सर फ़ीरोज़शाह का अनुकरण कर, अपने अख़बारों से, जाति-गत भावनाओं से ऊपर उठ कर विशुद्ध राष्ट्रीयता का प्रचार करें और सार्वजनिक मामलों में लोक-हित पर सदा दृष्टि रखें,

तो देश का बड़ा उपकार हो। सर फ़ीरोज़शाह मेहता का आत्म-चरित जीवन की प्रत्येक दिशा में पथ-प्रदर्शन करने वाला है। आशा है कि हिन्दी-भाषी युवक इस उज्वल चरित से लाभ उठावेंगे।

